[५]

श्री गोकुलनाथजी

[६]

श्री गोकुलचन्द्रमाजी

[७]

श्री मदनमोहनजी

[८]

श्री बालकृष्णजी

॥ श्रीनाथजी ॥

(१)

पुष्टिमार्गीय उत्सव, महोत्सव, मनोरथ, महामहोत्सव पर विचार

उत्सव—

मानव सृष्टि के अंगभूत आनन्द उल्लास हर्ष, इनको विशद रूप से प्रसरित होनो करनो, उत्साह बढ़ानो ही उत्सव कह्योजाय है। बड़े विद्वान् एवं महापुरुषन ने यह उत्साह हर्ष प्रभु विनियोग करावे सों लोकासक्ति हटाय के भगवद् विमुखन को प्रभु सन्मुख करानो। यासों उत्सव निर्माण किये। याको श्रीमद् महाप्रभु वल्लभाचार्य जी ने सुबोधिनी में या प्रकार वरनन कियो है। रास पंचाध्यायी पुष्टिमार्ग में प्रधान तथा सर्व रसदाता सर्व सुखदाता मानी गई है। सुबोधिनी जी में आयो है—

"रासोत्सवे सम्प्रवृत्ते गोपी मण्डल मण्डितैः"

"उत्सवे नाम मनसः सर्व विस्मारक आल्हाद उत्सव सम्पादनाय सजातीयान् एव रसोत्पादनार्थं विशेषमाह"

अपुन कौं तन मन से भुलाय के हर्षोल्लसित होय उत्सव सम्पादन करिवे लग जाय वामें सजातीय अर्थात् अपने सधर्मीन कूं मिलाय के, बुलाय के रसाप्लावित होनो ही उत्सव की अभिव्यक्ति करनी है। ये आनन्दानुभूति ब्रज भक्तन कूं "गोपी मण्डल मण्डितैः" या मण्डलाकार नृत्य में भयो।

युगल गीत सुबोधिनी में :—

"उत्सव श्रम रुचापि दृशीनां" "उत्सवमिति श्रमरूचा ब्रजस्थ दृशीनां उत्सवमुन्नयन् आशिषो दित्सया एतीतिसंमधः" "दृशीनां उन्नयन् इति" दृशिदर्शनम्। यदि भगवान् श्रान्तोनभवेत् तदा शीघ्रं गच्छेत्। तदा दृष्टिनां परमानन्दो सन्ततिर्न स्यात्। ऊर्ध्वं नयन्निलि संघाते दृष्टिनां यः आनन्दः स्थितः यावान् तदपेक्षयाधिक कृतवान्नित्यर्थः" भगवत् कीर्तेः सर्व पुरुषार्थ दातृत्वाय प्रकारं वदन् श्रममुपपादयति ॥"

उत्सवन में (मनोरथन में) प्रभु श्रमित होय तासों बिराजें, यदि श्रमित न होंय तो जल्दी पधार जाँय, तो वैष्णवन को भगवदीयन को आनन्दानुभव न होय तासों भगवत् कीर्ति, यश तथा उत्सव करके प्रभु प्रसन्नार्थ उत्सव करे क्योंकि प्रभु सर्व पुरुषार्थदाता हैं।

होत्सव—

यह महोत्सव आनन्द की अभिव्यक्ति प्रकट करके मनावे। यामें बालक कौं कट्य, विवाह तथा कोई मांगलिक कार्य देवता के यहाँ यज्ञ के रूप में लौकिक जब कोई सुखद वृत्त होय तब सबन कों बुलाय उत्सव महोत्सव रूप में करे। यनी आनन्दानुभूति लोगन में व्यक्त करे।

अवाद्यन्त विचित्राणि वादित्राणि महोत्सवे। [श्रीमद्भागवते १०-५-१३]
तदा महोत्सवो नृणां यदुपूर्या गृहे गृहे। [श्रीमद्भागवते १०-५४-५४]
प्रस्थापनोपानयनैरपत्यानां महोत्सवान्। [श्रीमद्भागवते १०-६६-३३]

नन्दरायजी के पुत्र रत्न प्रकटे तब महोत्सव करके विविध प्रकार के बाजे जवाये। श्रीकृष्ण श्रीरुक्मिणी जी कूं हरण करके द्वारका ले गये। वहाँ विवाह कयो। तब द्वारका में घर-घर महोत्सव भयो। भगवान श्रीकृष्ण ने द्वारका में पने गार्हस्थ्य में विविध प्रकार के महोत्सव किये। भक्त हूं गाये है—

नन्द महोत्सव बड़ कीजै।
अपने लाल पर वारि नौछावर सब काहू को दीजै।
विप्रन देहु गाय अरू सोनो माटन रूपे दाम।
ब्रज युवतिन पाटम्बर भूषण पूजे मन के काम।
नाचो गावो करो बधाई अजनम जनम हरि लीनो।
यह अवतार बाल लीला रस परमानन्द हि भीनो॥

महामहोत्सव—

अकस्मात् शुभ समाचार में सारे समाज के लोग उल्लसित हर्षित होय उठें और वे चौगुनो, अठगुनो सोलहगुनो उत्साह बढ़ावें। ताकूं महामहोत्सव कहै। जैसे बाबा नन्दराय जी के अनहोनी वृद्धावस्था में पुत्र रत्न की प्राप्ति भई तासों सारे नगर गांव-गांव में उत्साह की लहर दौरि गई और सबनने मिलिके उत्साह महोत्सव के रूप में मान्यो। चत्रभुजदासजी हू गाये है :—

बाजत कहा बधाई गोकुल में
पुत्र मानो भयो घर-घर निर्तत ठामे-ठाम।
महामहोच्छव श्री गोकुल गाम।
प्रेममुदित गोपी जस गावत स्यामसुन्दर को लै लै नाम।
जहाँ तहाँ लीला अवगाहत खिरकखोंरि दधि मन्थन ठाम।
करत कुलाहल निसि अरु वासर आनन्द ते बीतत सब याम।
नन्द गोपसुत सब सुखदायक मोहन मूरति पूरन काम।
चत्रभुज प्रभु गिरधर आनन्द निधि सखी सरूप सोभा अभिराम।

दूसरो प्रसंग—

श्री गोवर्द्धनधर श्रीनाथजी की ऊर्ध्व भुजा प्रकटी तब सर्वत्र महामहोत्सव मनायो। आश्चर्य चकित होय घर-घर मानता तथा देवदमन, नागदमन, इन्ददमन की झाँकी करिवे लोग-बाग दर्सनन कों उलटि परे।

मनोरथ—

मन के उत्साह कौं, इच्छा, लिप्सा, कामना पूरन करिवे कौं योजना बनाय के कार्य सम्पन्न करे। अरु वह प्रभु में तथा अपने इष्ट मित्रन में पूर्ति को करे, वही मनोरथ है।

रास पंचाध्यायी में :—

"मनोरथान्तं श्रुतयो यथाययुः" [१०-३२-१३ श्रीमद्भागवत]

"मनोरथास्ताभिः यथा कथंचित् संमधोभिलषितः" नयनमिल नित कथं प्राप्नुयुः। तत्राह श्रुतयो यथेति "श्रुतयो हि निरन्तरं भगवद् गुण वर्णन परा तेन धर्मेण वाचः पूर्व रूपं यन्मनः तस्यापि यद् गम्यं भगवत्स्वरूपं तत्प्राप्तवत्यः।"

आगे—तथा एतासामपि मनोरथान्तः प्राप्तिः। एवं पुरुषार्थं दातुर्भगवतोन्यत्र अभिनिवेशे आधार धर्म सम्बन्धित स्वरूप कृतार्थता न भविष्यतीति पूजार्थं आत्मनिवेदनार्थं च"

यासों जैसे श्रुतियाँ अहर्निस भगवद् गुण गान कर मनोरथ पूरन करें। पुरुषार्थं को अभिनिवेश आत्मनिवेदन करिके इच्छित फल प्राप्त करें। तासों मनोरथी प्रभु कूं अर्पण कर अभिलषित फल प्राप्त करें चाहे, पूर्व में चाहे बाद में ताकौं मनोरथ कहें हैं।

भक्त हूं गाये है
"मिट गये द्वंद नन्द दासन के भये मनोरथ भाये"
"श्री विट्ठल गिरधरन मनोरथ सबके पूजे आई"

उत्सव चार प्रकार के—

(१) नित्योत्सव, (२) नैमित्तिकोत्सव (निमितकूं लेंके), (३) पार्वणिक (पर्व पर) महोत्सव। (४) महामहोत्सव।

नित्योत्सव—

नित्य अष्टयाम सेवाको प्रातः काल मंगला से शयन पर्यन्त होय वह नित्योत्सव। मंगला से लैके शयन पर्यन्त प्रतिदिन सेवा करनो, अपने उत्साह सों नई-नई सामग्री, नये-नये शृंगार नये-नये रागन सों गुणगान करनो नित्योत्सव में आवे।

श्रीमद्भागवत में नित्योत्सव को वर्णन :—

"यस्याननं मकर कुण्डल चारुकर्ण
भ्राजत्कपोल सुभगं सविलास हासम्
नित्योत्सवं न तृतपुर्दृशिभिः पिवन्त्यो
नार्यो नराश्च मुदिताः कुपिता निमेश्च" [६-२४-६५]

भक्त हूँ गाये है—

"यह नित नेम जसोदा जू मेरो तिहरे लाड़ लड़ावन को"
दिन दुल्हे मेरो कुंवर कन्हैया।
नित उठ सखा शृंगार बनावत, नित ही आरती उतारति मैया।
नित उठ चंदन चौब लिपावत; नित ही मोतिन चौक पुरैया।
नित ही मंगल कलस धरावे, नित ही बन्दनवार बंधैया।
नित ही ब्याह गीत मंगल धुन, नित सुर मुनि वेद पढ़ैया।
नित-नित आनन्द होत वारिनिधि नित ही गदाधर लेत बलैया।

नित्योत्सव—नित्य सेवा में अष्टयाम। चार प्रातः, चार सायं। मंगला, शृंगार, ग्वाल, राजभोग—ये चार प्रातः। उत्थापन, भोग, आरती, शयन—ये चार सायं।

जगद्गुरु वल्लभ महाप्रभु के द्वितीय कुमार श्री गुसाँई जी विट्ठलनाथ जी ने अष्टयाम सेवा विधि के अष्टछाप, अष्टविधि लीला थापना करी तथा भोग, राग, शृंगार, सेवक तथा सेवकन की सेवा-प्रणाली कौ निर्णयात्मक मंडान कियौ।

जितने भी मर्यादा मार्गीय सेवाक्रम वारे आचार्य हैं तिननेहूं अष्टयाम सेवा स्थिति किए। उनमें तीन मुख्य हैं—

प्रथम जगद्गुरू वल्लभ महाप्रभु को सम्प्रदाय में गुसाँई जी द्वारा स्थापित अष्टयाम सेवा। दूसरी गौड़ पादाचार्य—नित्यानन्द जी द्वारा अष्टयाम वर्णन जामें—

१ निशान्त २ प्रातः ३ पूर्वाह्न ४ मध्यान्ह। प्रातः कालके
१ अपरान्हं २ सायं ३ प्रदोष ४ रात्रि। सायं कालके।

तीसरी श्री राधावल्लभ सम्प्रदाय में (निम्बार्काचार्य) स्वकीया भाव सों सेवाक्रम अष्टयाम किये।

प्रातः—(१) मंगला-निकुंज विहार (२) शृंगार-आरती निकुंज में
(३) वन विहार-राजभोग के पूर्व (४) राजभोग-यहाँ शृंगार बड़े होंय के राधाकुन्ड निकुंज विलास भवन में अनवसर

सायं—(१) उत्थापन जागें (२) वन भ्रमण-आरती पधारवे पर
(३) रास विलास-ओलाई (४) और शयन

याही प्रकार रस लीला के विविध भेद वर्णन मिलाय के सेवा क्रम स्थापित किए।

हरीदास स्वामी की सेवा पद्धतिः—

प्रातः (१) मंगला (२) शृंगार (३) राजभोग (४) निकुंज
सायं (१) उत्थापन (२) सन्ध्यार्ति (३) शयनार्ति (४) शय्या समय

नित्य सेवाक्रम के साथ उत्सवन की विधि हू पृथक् पृथक् है।

इन तीनों सम्प्रदाय में स्तुति प्रार्थना मान प्रणय आदि से है और प्रिया प्रीतम की युगल उपासना ही प्रधान है।

पुष्टि मार्ग में एवं श्रीनाथ जी में नवधा भक्ति के नव दर्शन होय। वे या प्रकार है। तथा सप्त स्वरूप एवं अष्ट सखाभाव सौं माने हैं।

मंगलाः—स्मरण भक्ति नवनीत प्रिय परमानन्द तोक चन्द्रभागा
शृंगार—कीर्तन भक्ति चन्द्रमाजी नन्ददास भोज चित्रलेखा
अपरसके—अर्चन भक्ति भोग सरे वाद ग्वाल के पूर्व
ग्वाल—आत्मनिवेदन भक्ति द्वारकानाथजी गोविन्द स्वामी श्रीदामा भामा
राजभोग—वन्दन भक्ति गोवर्द्धन (श्रीजी) कुम्भनदास अर्जुन विशाखा
उत्थापन—श्रवण भक्ति मथुरानाथ जी सूरदास कृष्णा चम्पकलता
भोग—दास्य भक्ति गोकुलनाथ जी चत्रभुजदास सुवाहु सुशीला
आरती—सख्य भक्ति विट्ठलनाथ जी छीतस्वामी सुवल पद्मा
शयन—पादसेवन भक्ति मदनमोहन जी कृष्णदास ऋषभ ललिता

कई घरन में दर्शन कमती होकर ६-४ तथा ८ भी होय है। श्रीजी में कभू उत्सवन में कम तथा कभू ज्यादा भी होय है। इनके भावादि उत्सवन में पृथक् है।

इन आठ दर्शन के तथा नौ दर्शन के स्वरूप भावना व शब्द की महत्ता सों श्रीमद्भागवत के आधार पर या प्रकार है।

मंगला

अमंगलनिवृत्यर्थं मंगल प्राप्त्यर्थं मंगला की सेवा राखी। श्रीगुसाँईजी श्रीविट्ठलनाथजी ने दशम की पूर्वार्ध की रसलीला की षट्पदी निर्मित करी और वह मंगल शब्द सों सारी भागवत अध्याय की रसलीला निहित करी वह यह है—

मंगलं मंगलं ब्रज भुवि मंगलम्।
मंगलमिह श्री नन्द जसोदा नाम सुकीर्तनमेतद्

रूचिरोत्संग सुलालित पालित रूपम्
श्री श्रीकृष्ण इति श्रुति सारं नाम स्वार्त जनाशय ।
तापापहमिति मंगल रावम् ।
ब्रज सुन्दरी वयस्य सुरभि वृन्द मृगी गण निरूपम्
भावा मंगल सिन्धु चया ।
मंगलमीषत्स्मित युत वीक्षण भाषणमुन्नत नासापुट गत चलनम् ।
कोमल चलदंगुलिदल संगत वेणु निनाद विमोहित
वृन्दावन भुवि जाता ।
मंगलमखिलं गोपीशितुरिति मंथर गति विभ्रम मोहित
रास स्थित गानम् ।
त्वं जय सततं श्री गोवर्द्धनधर पालय निज दासान् ॥

मंगल-मंगला-मंगल—

प्रातः काल उठत ही मंगल कामना मानवमात्र करत है । तासों दिन भर आनन्दमय बीते । निर्विघ्नता रूप मंगलमुख निरखि दैनिक कार्य आरम्भ करत है ।

ग्रन्थारम्भ मे हू पूर्व में मंगलाचरण करत है । तासों ग्रन्थ निर्विघ्न सम्पन्न होय । यासों ही याको नाम मंगला राख्यो ।

तदेव सत्यं तदुहैव मंगलं तदेव पुण्यं भगवद्गुणोदयम् । [श्रीमद्भागवत] १०-१२-४८

"यन्नामा मंगलघ्नः श्रुत मथगदितं यत् कृत्तो गोत्र धर्मः" ।
"सौमंगल्यगिरो विप्राः सूतमागधवन्दिनः ।
गायकाश्च जगुर्ननेदुर्भेर्यो दुन्दुभयो मुहुः ॥ [श्रीमद्भागवत १०-५-५]

मंगलमय मंगल स्वरूप को दर्शन प्रातः प्रथम करवे को ही मंगला नाम राख्यो तासों मंगला कही गई ।

शृंगार—

बालक कूं माताएं न्हवाय के काजर टिकुला करिके नूतन वस्त्र आभूषणादि धरायवे को ही शृंगार कहे है । शृंगार में विविध आभूषणादि विविधि प्रकार के धरावे, सजावे । नए कपड़ा गहना धरावें, सो ही शृंगार होय । तासों या दर्शन को नाम शृंगार राख्यो ।

धूलिधूसरितांगस्त्वं पुत्र मज्जनमावह ।
पश्य पश्य वयस्यांस्ते मातृमृष्टान् स्वलङ्कृतान् ।
त्वं च स्नातः कृताहारो विहरस्व स्वलंकृतः ॥
[श्रीमद्भाग० १०-११-१२-१६]

ग्वाल—

शृंगार करके बच्चा एक दफे बाहर जाय है और अपने समवयस्क बालकन के साथ खेले । तासों ग्वाल नाम राख्यो अथवा ग्वाल बालवत् शृंगार भये और प्रभु खेलवे पधारे । तासों ग्वाल शब्दसों दर्शन को नाम राख्यो गयो ।

ततस्तु भगवान् कृष्णो वयस्यैर्व्रज बालकैः ।
सहरामो व्रज स्त्रीणां चिक्रीडे जनयन् मुदम् ॥ [श्रीमद् भाग० १०-८-२७]

राजभोग—

राजकीय भोग जामें विविध राजकीय महाराजाधिराज राजनपति राजा नन्द राजकुमार की मध्याह्नकालीन सेवा । यामें भोग राग तथा साज सज्जा, सब ठाट-बाट सो राज-घराने के समान होवे । सो राजभोग नाम राख्यो गयो । यामें प्रिया-प्रीतम निकुंज-बिहारी, कुंज-निकुंज लीला करि सुख सों विश्राम करे । यामें खण्डपाट, सिंहासन, चोपड़ आदि बाघ-बकरी, गादी तकिया, पीकदान, इत्रदान, पानदान, बंटा आदि तैयारी होय । तासों राजभोग कह्यो । वन विहार गौचारणादि लीला यामें निहित हैं ।

"एवं तौ लोकसिद्धाभिः क्रीडाभिश्चेरतुर्वने ।
नद्यद्रिद्रोणिकुंजेषु काननेषु सरस्सु च ॥" [श्रीमद्भागवत १०-१०-१६]

उत्थापन—

वन में, निकुंजन में मध्याह्न में पौढ़ें, विश्राम करें, सो अनवसर होय तब जगायवे को नाम ही उत्थापन है । तासों या समय को नाम 'उत्थापन' राख्यो ।

क्वचित् पल्लवतल्पेषु नियुद्धश्रम कर्शितः ।
वृक्षमूलाश्रयः शेते गोपोत्संगोपबर्हणैः ॥
पादसंवाहनं चक्रुः केचित्तस्य महात्मनः ।
अपरे हतपाप्मानो व्यजनैः समवीजयन् ॥ [श्रीमद्भाग० १०-१५-१६-१७]

भोग—

'भोग' शब्द स्वीकृत मनचाही वस्तु प्राप्त्यर्थ होवे, ताकों भोग कह्यो है । वह पुलिन्दनन्दिनी गिरिराज तटवर्तिनी ललनाएं जाति सौं सूद्रा फल फूल विविध प्रकार के प्रभु विनियोग करावें, भोग लगावें । तासों 'भोग' शब्द कह्यो और राख्यो है । ये अपराह्न फल भक्षण को भोग लगावनो अरोगावनों है ताकों भोग कह्यो ।

श्रीदामा नाम गोपालो रामकेशवयोः सखा ।
सुबलस्तोक कृष्णाद्याः गोपाः प्रेम्णेदमब्रुवन् ॥
फलानि तत्र भूरीणि पतन्ति पतितानि च ।
[श्रीमद्भाग० १०-१५-२०-२२]

संध्या आरती—

दिन भर प्रभु वन-बिहार करे तथा कुंज-निकुंज लीला करें तब ब्रज ललना वियोगानुभव सो आर्त होवें तब आप पधार कर दर्सन दें। ता समय ब्रज ललनान के समुदाय में माता जसोदा वारनो—आरती (उतारो) करें। तासों या समय को नाम संध्या आरती राख्यौ। सम्यक् प्रकार की आरती अथवा अच्छे प्रकार सो 'वारनो' करनो।

"तं गोरजश्छुरित कुन्तल बद्ध बर्हं वन्य प्रसून रुचिरेक्षण चारुहासम्।
तत्संस्कृति समधिगम्य विवेश गोष्ठं सव्रीड हासविनयं यदपांग मोक्षम्।
[श्रीमद्भागवत १०-१५-४२-४३]

शयन—

'शयन' शब्द कों आचार्य महाप्रभु वल्लभ अपनी सुबोधिनी में बताये हैं। शक्ति-चयन-संग्रह ही 'शयन' है। तासों दिन भर की रस लीलानुभव को संग्रह (चयन) ही शयन है। तासों या समय को नाम 'शयन' राख्यौ।

"निरोधस्यानुशयनमात्मना सहशक्तिभिः"

अतः 'निरोध' के जो लक्षण बताये हैं—अपनी शक्तीन को निरन्तर साथ स्थित करनो ही शयन है। प्रभु लीलाहित गोपालदास जी वल्लभाख्यान में कहे हैं :—

"सकल ब्रज मा पौढ़िया ह्वालो करे विविध रमण सुखदान'

अष्टयाम सेवाक्रम तथा श्रीनाथजी (मन्दिर) में सेवक एवं सेवान की विशेषताएँ—

प्रातः शंखनाद के दो घंटा पूर्व 'गागर' आयवे की खबर जाय। अर्थात् पर चारगन कूं सेवारम्भ की सूचना होय। वह बैठक में गादीजी कूं, बड़े मुखियाजी कूं एवं कोई गोसांई बालक श्रृंगारी होय ताकूं गागर आयवे की सूचना भेजी जाय।

सेवा की अधिकारदात्री माँ जमुना महाराणी है। तासों सर्व प्रथम जमना जी के पधारवे की सूचना गागर आयवे की होय है। यमुनाष्टक के आठ श्लोकन की व्याख्या के आधार पर ये सेवाधिकारी सेवक होय तासों सूचना होय—

(१) सेवोपयोगी देहादि (२) तल्लीलावलोकनत्व (३) तद् रसानुभवत्व (४) सर्वात्मभाव (५) भगवत्वसीकरणत्व (६) भगवत्प्रियत्व (७) भक्तिदातृत्व (८) भगवद्रस पोषकत्व।

या प्रकार प्रत्येक सेवक में मैय्या जमनाजी द्वारा ये अष्टभाव न होय तब तक सेवा सुख न मिले। तासों गागर पधारवे जमना जी के सेवा में पधारवे की सूचना जाय। ये सूचना तीन ही क्यों जाँय—ताको उत्तर—

(१) राजस रूप सों गादीजी में आचार्य वल्लभ तथा तिलकायत को प्रमाण रूप सों (२) सहचरी प्रधानसखी तामस बड़े मुखिया प्रमेय रूप सों। (३) श्रृंगारी साधन रूप सात्विक और सब फलरूपा सेवक वर्ग तत् तत् सेवाधिकारी की सूचना पहुँचते ही सेवा में संलग्न होय जाँय।

सेवक वर्ग सखी भाव तथा अपरस चार हैं। तत् तत् सेवाधिकारी की चार यूथाधिपन की सेवा रूप है—

१ सखी—शाकघर की अपरस; कुंजलीलाधिकारी जमुना—महाराणी स्वरूपा।

२ आली सखी—परचारग की अपरस निकुंजलीलाधिकारी ललिताजी के स्वरूप सों।

३ प्रिय सखी—भीतरिया मुखियादि चन्द्रावलीजी की ओर सों निविड़ निकुंज लीलाधिकारी।

४ प्रेष्ठ सखी—आज्ञाबिगर स्वामिनीजी के स्वरूपाधिकारी निभृत निकुंज लीलाधिकारी।

इनकी अंतरंगवर्ती आठ-आठ सहचरी जो इनको परिकर कह्यो जाय उनमें ८-१२-१६ हूँ है। वही परचारक तथा अन्य सेवक वर्ग है। परिकर या प्रकार है—

ललिताजी को परिकर—

सौरभ—रतिकला—रत्नप्रभा — मन्मथामोदा—
हंसी — चित्रलेखा — कुंजरी—शशिकला—
सुन्दरी—रसालिका—मधुरा—नृत्यकेली—कुमोदिनी—
रूपा — रंगा — मधुवेनी — बहुलाखिनी—
विरजा — रसभद्रा। (कुल १७)

विशाखाजी को परिकर—

गति उत्तालिका—गुणचूड़ा—सूरसेनी—कामलता—
तिलकिनी—कन्दर्पा—सुगन्धिनी—मोहिनी—केतिकी—
रंग हंसा, रसतरंगिनी—सरोवरी—गुणचूढ़ा (द्वितीय)

यमुना परिकर—

श्यामा — कृष्णा — कृष्ण वेणिनी—ईश्वरी—
रसालिका—रसप्रकाशिका—कावेरी—छविधामा—मनोहरा

चन्द्रावली जी—

चन्द्रलता—चन्द्रिका—शुभानना—कमला
कुरंगाक्षी—चतुरा—मेना।

राधिकाजी—

प्रेम मंजरी—कलकण्ठी—मधुरेक्षणा—मल्लिका—
व्रज-विलासिनी—कृष्णावती—मोहिनी—केलिनी
सुगन्धी, सीला, लीला (कुल ११)

अतः आपके सब स्वरूप परचारक तथा अन्य सेवक वर्ग यामें आवे हैं। ये असंख्य व्रज भक्तन के समुदाय की भावना सो सेवा होत है।[१]

(२)

गोस्वामी तिलक तिलकायत सम्प्रदायाधिप सम्बन्धी विचार—

प्रश्न—तिलक शब्द ते कहा तात्पर्य है ?

उत्तर—श्रीमद्भागवत १०-३५-१० युगल गीत के दशम श्लोक की सुबोधिनी या प्रकार है। "दर्शनीय तिलको" 'दर्शनीयानां मध्ये तिलको योऽति सुन्दरः।' देखवे वारेन के मध्य में तिलक रूप आप सुन्दर है। आगे—"अतिसुन्दरत्व निरूपणे तिलकत्वोक्त्या तद्यथा भाग्य स्थाने भाले तिष्ठति तथेदममि स्वरूप परम भाग्यवतेष्वेवतिष्ठति इतिध्वन्यते।"[२]

अति सुन्दरता को निरूपण में तिलक कह्यो है। सौभाग्य स्थान भाल है। भालरूप अपने स्वरूप में परम भाग्यवान् होय के स्थित है, यह स्पष्ट है। तासों सबन के भालरूप मूर्धन्य पूज्य स्थानवत् तिलक भये।

भगवदाज्ञा सों तिलकायत तथा पूर्वाचार्य परम्परागत पद प्राप्त होय है दूसरो नहीं

"पित्रा चानुमतो राजा वासुदेवानुमोदितः।
चकार राज्यं धर्मेण पितृपैतामहं विभुः॥ [श्रीमद्भागवत १-८-४८]

पिता के समक्ष या पिता की अनुमति सों, प्रभु नन्द राजकुमार के अनुमोदन सों अपने पिता, प्रपितामह को अधिकार प्राप्त होय है।

आगे समस्त भैया बन्धून के द्वारा हू पदासीन सिंहासनासीन होय है, जैसे—

"अग्रहीदासनं भ्रात्रा प्रणिपत्य प्रसादितः" [श्रीमद्भागवत ८-१०-५१]

भाईयन के आग्रह सों राज सिंहासन स्वीकार कीनो।

१—[हरिराय चरित्र द्वारकादास पारिख सम्पादित पृष्ठ १०६]

२—आज्ञाचक्र तृतीय नेत्र तथा भ्रू के बीच स्नायुओं से ओत-प्रोत करने से पूर्व स्मृति होकर सुख समृद्धि मिलती है। आज्ञा चक्र शक्तियों को जागृत करता है तथा ज्ञान तन्तुओं का विकास भी करता है। आचार्य स्वयं इसीलिये तिलक रूप हैं। शिष्य को तिलक करके वे स्वस्वरूप में स्थित भी करते हैं।

"तत्र चक्रुः परिवृढौ गोपा राम जनार्दनौ।" [श्रीमद्भागवत १०-१८-२०]

खेल में ग्वाल-बालन ने बलराम अरु कृष्ण को नायक बनाये।

व्रज साहित्य में तिलक एव तिलकायत वल्लभाचार्य एवं उनके वंश कूं मान्यो है। सो वर्णन या प्रकार मिले है—

गोविन्द स्वामी—"बधाई सब मिल गावो आज।
तैलंग तिलक द्विज लक्ष्मण भट्ट गृह आये भक्ति विस्तार।"

कुम्भन दास—"प्रकटे विट्ठलेश लाल गोपाल।
द्विज कुल मण्डल तिलक तैलंग श्री वल्लभजी अतिरसाल।"

संगुणदास—"कांकर वारे तैलंग तिलक।
द्विज वन्दौं श्री भट्ट लक्ष्मण नन्द।"

दास गोपाल—"तिलक तैलंगना हो त्रिभुवन वन्दना हो।
भवभय भंजना हो कलिमल खण्डना हो।"

विष्णुदास—"जगतगुरू नाम सुन्यो जब श्रवण ऐसो देख्यो रूप निहार।
तिलक विलोक तैलंग देश द्विज श्री वल्लभ गृह बिहार।"

परम्परागत तैलंग तिलक—

"जयति तैलंग तिलक भट्ट लक्ष्मण तनुज
वल्लभाधीश पद कमल वन्दे।"

हरिराय-भावना

कुल तीन प्रसिद्ध हैं—रघुकुल तिलक, यदुकुल तिलक, वल्लभकुल तिलक। इनमें रघुकुल तिलक, यदुकुल तिलक और वल्लभकुल तिलक कई स्थानन में वर्णन मिलै है।

सम्प्रदाय कल्पद्रुम ग्रंथ में सम्प्रदायाधिप तिलकायत कूं मान्यो है। कई स्थानन में यावंश को ही सम्प्रदायाधिप कह्यो गयो है। गुसांईजी के ज्येष्ठ पुत्र गिरधर जी सों ही वंश परम्परा चालू मानी गई है—"प्रकटे गिरधर लाल के दामोदर गृह जोत।"

"श्री गोवर्द्धन धरण को दामोदर हि भजाय।
गिरधर गोपीनाथ को श्री मथुरेश बताय॥"
"बहुरि सम्प्रदायाधिप भये विट्ठलनाथ सुजान।
दैवीजन उद्धरण कौं भक्ति मार्ग सुखदान॥"

ये विट्ठलनाथ जी टिपारा वारे दामोदर जी के पुत्र भये। इनके चार

[तिलक पद रजनीश से उधृत, गहरे पानी पेठ स. १९७१, अगस्त]

पुत्रन में मेवाड़ पधरायवे वारे गिरधर जी के पुत्र कौं सम्प्रदायाधिप किये और माने सो या प्रकार है—

"बहुरि सम्प्रदायाधिप भये—दामोदर हरसाय।
गोविन्द प्रभु गृहकाज गहि उत्तर कर्म कराय॥
सुष्ठु सुवर्णि गेह लखि शुभ मुहूर्त बलपाय।
श्री दामोदर लाल कौं कियो विवाह हरसाय॥

भैया बन्धून को टंटा निबटाय के ६० शृंगार दिये। श्रीनाथजी द्वारा श्री विट्ठलनाथ जी टिपारा वारेन पै शीश पै हाथ धरि सेवा में प्रधान तिलकायतपन दीनो[१]।

तिलकायत स्वरूप—

श्री गोवर्धनधरण धीर श्रीनाथजी सकल पुष्टि मार्ग के प्राण धन, जीवन धन सर्वस्व है तथा इनसों ही समस्त निधियनकों सेवा प्रकार कौ अविर्भाव माने है। अरु इनकी लीला रूप दूसरे विग्रहन में बिराजमान हैं। ये मुख्य निधि षोडष है। उनमें तिलक में सब मथुरानाथजी—विट्ठलनाथजी—द्वारकानाथ जी—गोकुलनाथजी—गोकुलचन्द्रमाजी—मदनमोहनजी। तथा छः ही गोद के स्वरूप हैं। वे या प्रकार हैं:—सूरत वारे बालकृष्ण जी, राज नगर वारे नटवर जी। नवनीतप्रिय जी के यहाँ बिराजे—वे बालकृष्ण जी और मदनमोहन जी। चन्द्रमाजी में बिराजे वे बालकृष्ण जी और मदनमोहन जी। सो या प्रकार द्वादश स्वरूप भये।

मुकुन्दरायजी, श्री नवनीतप्रिय एवं श्री गोवर्धनधर एवं चरण पादुका जी श्रीवल्लभस्वरूप हैं। या प्रकार षोडष कला युत पूर्ण चन्द्र स्वरूप तिलक होत हैं। उन सबन के स्वरूप तथा स्वभाव आप में एक कालावच्छिन बिराजें तासों ही या वल्लभ कुल में नाम हूं प्रभु परक होत हैं।

प्रश्न—सब प्रभु कैसे मानवे में आवे? प्रभु तो एक ही है। यहाँ सब बालक तारूपसों पृथक्-पृथक् कैसे बिराजे? प्रभु तो एक ही होने चाहियें।

उत्तर—मुचकुन्द कौं भगवदाज्ञा भई:—

"जन्म कर्म्माभिधानानि सन्ति मेऽङ्ग सहस्त्रशः।"[श्रीमद्भागवत १०-५१-३७]

प्रभु कर्तुमकर्तुं अन्यथा कर्तुं समर्थ है। जब ब्रह्माजी वत्सहरण करवे आये तब आपने अपने स्वरूप के अनेक स्वरूप एक काल में कीने। ऐसे ही बहुलाश्व राजा अरु श्रुतदेव ब्राह्मण के यहाँ एक समय में दोनों रूप धरि के आतिथ्य

१—[पृ० ४४ वार्ता श्रीनाथजी की अ० वि० ना०]

स्वीकारे। तासों ही वल्लभ कुल में प्रभुवत् नाम तथा साम्य होत है। अरु तिलकायतन कौ स्वरूप प्रभु तथा प्रभुलीला परक है जैसे सर्वप्रथम जगद्गुरु वल्लभ महाप्रभु प्रकटे। तो जगत् के प्राणी मात्र के प्यारे को वल्लभ कहे। वही यहाँ वल्लभ नाम सों भये। वल्लभ प्यारे को तों लीला हेतु विट्ठल (बालक) विकर्षेण ठलति (क्रीडति) आदि। सो वे विट्ठलेश (गुसांईजी) कौन रूप सौं पधारे तो प्रभु ने झारखण्ड में जताई। वही गोवर्द्धन गिरधारी जी भये। वे गोवर्द्धननाथ ने कहाँ लीला करी। बड़े-बड़े इन्द्र जैसेन कों मदचूर करि पूजित होय अभिषेक कराय गोविन्द नाम धरायो। वे गोविन्द भये। गोविन्द कौन तथा कहा लीला करी वही बालक बालकृष्ण रूप सों प्रकटे। बालकृष्ण कौन? तो गोकुल के नायक पति अथवा नाथ। वही गोकुल नाथ भये। वे गोकुल के नाथ ने उभय लीलाकरी—**मर्यादा स्थापन तथा पुष्टि**। तासों रघुनाथ जी भये। अरु वे रघुनाथ जी पूर्ण पुरुष यादव कुलोद्भूत प्रभु यदुनाथ भये। श्री अंग सो आप घनश्याम है अतः नाम घनश्याम भयौ। या ही प्रकार आचार्यन में तिलकायतन के नाम स्वभाव स्वरूप लीला या प्रकार है। भक्त हूं गाये है—

"जे वसुदेव किये पूरन तप सो फलफलित वल्लभ देव।" [छीत स्वामी]
"प्रकटे विट्ठल लाल गोपाल।" [चत्रभुज दास]
"वरनो श्री वल्लभ अवतार।"
"गोकुलपति प्रकटे फिर गोकुल सकल विश्व आधार।"
"सेवा भजन बताय निजजन कों मेट्यो यम व्यवहार।"
"कुम्भनदास प्रभु गिरधर आये देवी उतरे पार।" [कुम्भन दास]
"सेवक की सुख रास सदा श्री वल्लभ राजकुंवार।" [छीत स्वामी]

"अपुन पे आप ही सेवा करत, आपुन ही प्रभु आपुन ही सेवक अपनो रूप उर धरत॥" [छीत स्वामी]

वल्लभाख्यान में तिलक माने—"औ तेलंग तिलक त्रिभुवन धणी।"
आप सेवा करी सीखवे श्री हरि भक्ति पक्ष वैभव सुदृढ़ कीधो। [वल्लभाख्यान]

राजा सत्यव्रतने गुरु महत्ता वर्णन करि प्रभु की गुरु भाव सौं पूजन कियो सो श्लोक:—

"अनाद्यविद्योपहतात्म संविदस्तनमूल संसार परिश्रमातुराः।
यदृच्छये होपसृता यमानुभूविमुक्तिदो नः परमो गुरूर्भवान्॥

.....

तं त्वामहं देववरं वरेण्यं प्रपद्य ईशं प्रतिबोधनाय ।
छिन्ध्यर्थ दीपैर्भगवन् वचोभिर्ग्रन्थीन् हृदय्यान् विवृणु स्वमोकः ॥

[श्रीमदभाग. ८-२४-४६-५३ तक]

तिलकायत नाम साम्य लीला स्वरूप—

"यदा यदा हि धर्मस्य ग्लानिर्भवति भारती ।
अभ्युत्थानम् धर्मस्य तदात्मानं सृजाम्यहम् ॥"
"परित्राणाय साधूनां विनाशाय च दुष्कृताम् ।
धर्म संस्थापनार्थाय सम्भवामि युगे युगे ॥"

[श्रीमद्भगवदगीता ४-७ व ८]

अतः भगवद् गीता की या उक्ति के अनुसार प्रभु युग-युग में अवतरित होय उपर्युक्त पुष्टिमार्ग के सन्मार्ग दृष्टा होय के दैवी जीवन के उद्धारार्थ कृतार्थ करन हेतु अपनी लीला रस दानार्थ बार-बार उन्हीं नामन सों अवतरित होय हैं। उही लीला करें जैसे गोवर्द्धनधर श्रीजी। गुसांईजी के ज्येष्ठ लालजी श्री गिरधरजी प्रकटे। उनके पुत्र भक्तन के हित साधन कों आप कष्ट सहि, दुसरेन कों भलो कीनो। उलूखल सो बंधिकै यमलार्जुन कौ मोक्ष कीनो तो यहाँ हूं दामोदर जी प्रकटे। दाम (रस्सी) सो स्वयं बंधि के जीवन की जड़ता रूप वृक्षयोनि छुड़ावन हेतु आप दामोदर भये। वे दामोदर घुटुवन चल वृक्षन तक पहुँच स्तुति कराय यमलार्जुन को श्राप मुक्त किये। वही श्री टिपारा वारे विट्ठलेश रायजी भये, जिन प्रभु सुखार्थ गोपालक बनिकें दूधघर अरोगाय गोपालन में वृद्धी करी। तो विट्ठलेश जी की लीला से जनमोहित भये अरु उन्हें वह गोवर्द्धनधर श्रीनाथ जी के दर्शन भये।

वैष्णव भगवदीयन कों उनके दर्शन देवे लाल (बालक) गिरधर श्रीनाथजी प्रकटे। देश देशन के जीवन की भगवान की इच्छा राखी लीला दर्शन तथा प्रभु सुख सो सेवा करन चाहे तब वही गोवर्द्धनधर दामोदर बन बंधे भये रस्सी सों उलूखल खेंचते पीछे आगे अवलोकन करते वृक्षन तक ले गये अर्थात् मेदपाट में पधराये। जब प्रभु कों लीला में घुटुवन चलन की याद आई। व्रज भक्तन को निरोध करिवे आप पुनः विट्ठलेश भये। श्रीनाथजी की बाललीला अवलोकन में रत भक्त भूल न जाय, तासों वही गोवर्द्धनधर गोवर्द्धन पर्वत के ईश गोवर्द्धनेश भये। मायावादी धनमदान्धन को मान मर्दन करि प्रभुरस में निमग्न करन हेतु गोविन्द प्रकटे भये। जिनने बाललीला में सबन को मोहित किये। इन्द्रमान मर्दन गिरिराज धरि गोविन्द नाम में भूल न पड़े तासों पुनः गिरि गोवर्द्धनधारी घसियार पधरावन

आवो, हमारी सेवा करो। रामदास जी व्रज आय गुसाँई जी सों आज्ञा लेय के शाकघर में सेवा करत हुते। श्रीनाथजी शाकघर में पधारि सेवा बतावते। रामदास सों वार्ता करते। एक दिन श्रीनाथजी ने आज्ञा करी—हों गुलाल कुण्ड की कुञ्ज में जात हों, तुम शीतल सामग्री लेइ गुलाल कुण्ड आवो। रामदास सामग्री सेवा लेइ गुलालकुण्ड गये, तहाँ रामदास ने सबरी लीला के दर्सन किये। इतने में शंखनाद भये। श्रीजी तो तुरंत मन्दिर पधारे और रामदास बहुत डरपे धीरे-धीरे भोग के समय आय पहुँचे। मन में सोची गुसाँई जी कहा आज्ञा करेंगे। परंतु श्रीजी ने पूर्व में ही गुसाँई जी को जताय दीनी हुती कि रामदास मेरे सङ्ग गयो हुतो। उनसो कछु मत कहीयो। जब रामदास आये तो गुसाँई जी आज्ञा किये—रामदास तुमको श्रीनाथ जी जहाँ संग ले जाँय तुम जायो करो। शाकघर में हम दूसरो मनुष्य पठाय देगे। तुम्हारो बड़ो भाग्य है। वे ही रामदासजी आगे मुखिया भये।

ललिताजी को स्वरूप वर्णन—

"गोरोचना रूचि मनोहर कान्ति देहां,
मायूरपिच्छ तुलि तुच्छ विचार वेलां।"
"राधे तव प्रिय सखीं च गुरूं सखीनां,
ताम्बूल भक्ति ललितां ललितां नमामि।"

निवास इनको ऊंचो गाम, आपकी अवस्था १४ वर्ष ३ मास १२ दिन की है।

[२] **दुसरी मुखिया**—[श्री विशाखा जी]

आप ललिताजी की अन्तरंग सेवा में तत्पर है। तासो ही धमारन में हू वर्णन मिले—

"अरी चल नवल किशोरी गौरी मोरी होली खेलन जाय।
सखियन में हि तू विशेष विशाखा जानो तन पर छाय॥

यासों ही गोस्वामी बालक तिलकायत माला धरावे तब ललिता माला पहिरावे, विशाखा झिलावे, स्वामिनी स्वरूपा चन्द्रावली स्वरूपा वल्लभ कुलबालक होवे सों निकुञ्जाधिकारिणी माला बीड़ा झिलावे। इनकी सेवा आभूषणन की है, कारण आभूषण जितने प्रभु-संयोगात्मक होवे सो स्वामिनी भाव तथा अंगसंगरस प्राप्त होवे सो विशाखाजी उनकी सार संभार करैं। इनको वर्णनः—

सौदामिनी निचय चारू रुचि प्रतीकां,
तारावली ललित कांत मनोज्ञ चेलां।
श्री राधिके तव चरित्र गुणानुरूपां,
सद् गन्ध चन्दन रतां विशिखां विशाखाम्॥

वारे **गिरधारीजी** भये। अरू इनने श्रीनाथजी कूं घसियार पधरायें। जब नाथद्वार की विरह रूपसों दयनीय स्थिति देख, ब्रज में जैसे वलदेव जी पधारे। याही प्रकार दुहरे मनोरथकर्ता **दाऊजी** (बलदेबजी को स्वरूप) भये। जिनने राजलीला सरूप सात स्वरूप पधराय, अनेक मनोरथ कर भक्तन के विरह दूर कीनो। नन्द-जसोदा गोपी ग्वालन को सुख दीनो। जब विविध मनोरथ की रसधारा बढ़ी अरू सब अपने अपने रसमग्न होवें सो मान (गर्व) वढ्यो। तब समस्त वैष्णव पुष्टि-सृष्टि ने विट्ठलेश (गुसाईजी) सो प्रार्थना करी। वही विट्ठलनाथजी के यहाँ सो **गोविन्द** इन्द्रमान मर्दन वारे पधारे और भक्तजन गौ ब्रजवासिन की लज्जा राखी। जब देवराजवत् नाथद्वारा के नागरिक वैष्णव तथा सेवक गरीबन को कुछ न समझवे लगे, अत्याचार बढ़ायवे लगे, तब पुनः श्रीजी को वीर रसमय दुष्ट दमन करिवे वारो रसधारा प्रवाह मय **गिरधारीजी** को जन्म भयो।

जब राजस् तामस भक्तन की बढ़ोत्तरी भयी, तब रसलीला न्यून पड़वे पर **गोवर्द्धनलाल** (कृष्ण कन्हैया) प्रकटे। और आपने ब्रज के समान रस लीला तथा पुष्टि मार्ग वैष्णव सृष्टिको भाव तथा सुख समृद्धि में ओत-प्रोत कीने। जैसे बालक को सब गोदी में खिलावें, रात-दिन गोदी सों उतारे नाहीं। तब बालक अबूझ कर ब्रज प्रांगण स्वरूप नाथद्वारा में घुटुवन चले, उधम मचाए, दही के माट फोड़े तथा अनेक बाल चापल्य लीला करन लगे तब जसोदा मैया क्रोधाभिभूत होय के डरावन लागी। अरू कन्हैया कूं बाँध दीने वही **दामोदर लाल** (गुसाई जी के तामस स्वरूप) प्रकटे। दामोदर प्रभु की लीला अद्भुत, अनुपम देखी, जैसे बन्दरन को माखन लुटानो, छोटे छोटे बच्चान को जगानों, क्रीड़ा करवे ले जानो घर-घर घूम्के रसदान देनों आदि। या लीला सों ब्रज भक्त तो आनन्दित भये। रसाप्लावित भये। परन्तु जसोदा मैया की गोद सो पृथक् भये कन्हैया ने बनलीला की क्रीड़ा करी तब देवता घबराये। अरू डरे वा रसलीला करन हेतु पुनः—**गोविन्द** नाम धरिके इन्द्र को आगे करि अभिषिक्त किये।

गोविन्द गो अर्थात् वाणी, गो इन्द्रियन की रक्षार्थ गोविन्द नाम धर राज्य तिलक कियो। इन्द्र को मान मर्दन होयवे सो **इन्द्रदमन** के बड़े भाई **बलदेवजी दाऊ दादा** को हल मूसल सहित इन्द्रदमन कृष्ण एवं बलदेव, ये दोनों स्वरूप गोविन्दाचार्य के साथ चतुर्व्यूह सों **श्री गोवर्द्धनधर गोविन्द, दानीरायजी, इन्द्रदमन, धोका दाऊजी, दाऊ दादा** अरू वे ब्रज के चतुर्व्यूह द्वै-द्वै एक में स्थित होय के दो कुमार प्रकटे—

संकर्षण तथा दानी राय जी—ये दाऊ दादा तथा इन्द्रदमन गोविन्ददेव तथा हरदेव या प्रकार तिलकायतन के स्वरूप स्वभाव लीला दर्शन होत हैं।

"महा अलौकिक अग्निकुल यह अलौकिक अष्ट छाप है।
अलौकिक सब भक्त जनजे शरण लीने आप हैं ।।"

[गो० द्वारकेश जी भावना वारे।]

"पुत्र पौत्रादिक सुख सूं कहूं जो तु एक रे रसना।
श्री विट्ठल कल्पद्रुम फल्यो, तेनी शाखा पसरी अनेक रे रसना ।।',

गोपालदास नवाख्यान वारे।

(३)

सेवक स्वरूप वार्ता के आधार सहित—

[१] **श्रीजी के बड़े मुखिया**—भावना में ललिताजी तथा जसोदा जी। र सेवाक्रम में प्रधान होवे है सो। मुख्यता सों मुखिया कहे गये। चन्द्रावली जी ुसाईंजी] की अन्तवर्ति सहचरी होयवे सों ललिता भई। इनकी सेवाक्रम में हुत से पद हैं—

'ललिता जगाय दे री भई बड़ी वार बड़ी"
"लाड़ली लाल सेज उठ बैठे सखी सब मंगल भोग धरावे।
कंचन थार जटित धर मोद ले ललिता हति ढिग आवे ।।"

यह मार्ग हूँ दामोदरदास ललिता स्वरूप होवे सों ये ललिता भाव सो है।

प्रश्नः—पुष्टिमार्ग में पंच-द्राविड साँचोरा सेवा में उच्च में श्रेष्ठ सखी प्रिय सखी रूपा काय कों ?

उत्तर—यहां सारी सेवा भगवदाज्ञा तथा आज्ञानुभव तत् तत् आचार्य द्वारा प्राचीन परम्परा सों है। श्री गोवर्द्धनधर श्रीजी ने ही जिन जिन कों जो जो सेवा की आज्ञा दीनी। ता ता सेवा में आचार्य ने राखे और सेवाधिकारी भये।

सर्वप्रथम शाकघर में समस्त सेवकन कों जानों परे। ताको आशय यह जमनाजी के भाव सों रसकुंज स्वरूप शाकधर है ताकी सेवा बिना कहूँ सेवाधिकार न बने तासों सर्वप्रथम शाकघर में सेवा होय। तहाँ प्रभु आज्ञा करें और सेवा देय। या शाकघर की सेवा सों लौकिक-अलौकिक सकल कामना पूर्ण होय।

गुसाँई जी के सेवक रामदास खम्भात वारे—

एक समय गुसाँई जी गुजरात पधारे तब रामदास जी को निवेदन भयो। उनने गुसाँई जी सो पूछी—मोको कहा आज्ञा है। तब गुसाँई जी आज्ञा किये—अष्टाक्षर पंचाक्षर जपो। तब सो रामदास जी एकान्त में बैठ अष्टाक्षर जपते। ऐसे करत एक दिन श्री गोवर्द्धनधरण श्रीजी ने आज्ञाकरी—रामदास तुम ब्रज

आपकी आयु १४ वर्ष १ मास १६ दिन की मानी गई है।

[३] **तीसरी मुखिया**—[चित्रा सखी] वस्त्रदानरत

वस्त्रधर सेवाधिकारिणी—या में ही दरजी खानो इनके नीचे आवें। इनको स्वरूप या प्रकार है।

काश्मीर कान्ति कमनीय कलेवराभां,
सुस्निग्ध काच निचय प्रभ चारू वेलां।
श्री राधिके तव मनोरथ वस्त्र दाने,
चित्रां विचित्र हृदयां सदयां प्रपद्ये।

गुसांईजी की वार्ता—

वस्त्रधर को स्वरूप तथा भाव। आचार्य लोग वस्त्र पधरावें, प्रभु अंगीकार करें। (वार्ता १११)

प्रेमजी भाई लुवाणा भाटीया—सो वे हालोल में रहते। प्रेमजी भाई ब्रज यात्रा करवे आये। गुसांईजी के सेवक भये। श्रीनाथजी के दर्शन करि के मन में ये आई—मैंहू सेवा पधराय सेवा करूं। तब गुसांई जी सों प्रार्थना करी, महाराज मोकूं सूक्ष्म से सूक्ष्म सेवा पधरावें। तब गुसांई जी ने वस्त्र सेवा पधराई। ठाकुरजीवत् पधराय सेवा करन लगे। देस में आय भली भाँति सेवा करन लगे। एक दिन प्रेमजी भाई के मन में आई कि वैष्णव के तो सरूप बिराजे और अपने यहाँ वस्त्र। ठाकुरजी कैसे अरोगते होंयगे। फेर प्रेमजी भाई ने उत्थापन किये। दर्शन करे कि तार-तार में प्रभु स्वरूप के दर्शन भये। तब प्रेम जी ने निश्चय कियो कि ठाकुरजी सब एक हैं, मोकूं वृथा संदेह भयो। ये संदेह ठाकुरजी ने मिटायो। तासों वस्त्र सरूप चित्राजी सेवा में तत्पर रहें हैं।

[४] **मंदिर को भीतरिया**—(चम्पकलताजी)

सेवाक्रम में इनकी चँवर सेवा मानी गई है, तासों ही मन्दिर की स्वच्छता आपके हाथ में है।

आपको स्वरूप भाव—

सद्रत्न चामर करां वर चम्पकाभां
चाषादिदिव्य पक्षि रूचिरच्छवि चारूवेलां।
सर्वान् गुणां स्तुलयितुं दधतीं विशाखां
राधेऽथ चम्पकलतां भवतीं प्रपद्ये।

आपकी आयु १४ वर्ष २ मास ८ दिन।

पद्मरावल सांचौरा के बेटा कृष्ण भट्ट [वार्ता ६]—

ये कृष्ण भट्ट गुसांईजी के सेवक भये। गुसांईजी ने श्रीमद्भागवत, सुबोधिनी आदि पढ़ाई, पुष्टिमार्गीय सिद्धान्त बतायो।

श्रीकृष्ण भट्टजी एक समें भीतरियापने में न्हाये और सब सेवा करन लागे। एक दिन श्रीनाथ जी कृष्ण भट्ट सो आज्ञा किये—मेरे चरण स्पर्श कर। तब कृष्णभट्ट बोले : जो लीला के दर्शन होवे तो चरण स्पर्श करूं। तब श्रीनाथ जी आज्ञा किये : लीला दर्शन तो देहान्तर में होयगो। सुन के कृष्णभट्ट उदास होय अनमने बैठे। जब श्री गुसांई जी पधारे पूछी कृष्णभट्ट अनमने कैसे हो? तब कृष्णभट्ट जी ने सब बात कही। गुसांई जी बोले— श्रीजी तो बालक है। उठ चल चरण स्पर्श कर। हाथ पकड़े चरण स्पर्श कराये। अरू सारी लीला के दर्शन भये। श्रीकृष्णभट्ट बहुत प्रसन्न भये और दृढ़ निश्चय कियो कि श्रीनाथजी गुसांईजी के बस में है। गुरू कृपा सब कुछ करि सके। तासों जब तक लीलानुभव न होय, तब तक चरण स्पर्श न होय।

[५] **रसोइया जी**—[तुङ्गविद्याजी]

इनको स्वरूप रोहिणीजी तथा तुङ्गविद्याजी को है। सखड़ी रसोई की सारी सेवा के प्रधान आप हैं। तासों ही निकुञ्ज सेवा की आरती राजभोग की एवं शयन की है तथा भीतर कई सेवा मन्दिर वस्त्रादि तत् तत् सेवाक्रम में है। आपकी अवस्था तथा स्वरूप वर्णन या प्रकार है। आप ही सभा स्थल की अधिकारिणी है—

सच्चन्द्र चन्दन मनोहर कुंकुमाभां,
पाणौच्छवि प्रचुर कान्ति लसद्दुकूलां
सर्वत्र कोविदतया महतां समाज्ञां,
राधे भजे प्रियसखीं तव तुङ्गविद्याम्।

आपकी अवस्था १४ वर्ष २ मास २० दिन

पुरुषोत्तमदास जी भीतरिया—

एक सेवक सांचोरा ब्राह्मण पुरुषोत्तमदास गुजरात में रहते। एक समे गोकुल आये, गुसांई जी के सेवक भये। पुरुषोत्तमदास ब्रज यात्रा करिवे गये सो कदम्ब खण्डी में रसोइ करी दाल-बाटी। अरू श्रीनाथजी कों भोग धर्यो। श्रीजी वहाँ पधारे, भोग-अरोगे और पुरुषोत्तमदास सों आज्ञा किये—तुमको दाल-बाटी अतिसुन्दर बनानी आवत है। हमारी रसोई में न्हावो। तब पुरुषोत्तमदास विनती किये कि ये बात तो गुसांईजी के हाथ है। तब श्रीनाथ जी गुसांईजी सों आज्ञा किये अरू पुरुषोत्तमदास को श्रीनाथ जी के रसोइयापने की आज्ञा दीनी। श्रीनाथ

जी रसोइया जी को जाय के सिखावते । उनने जन्म पर्यन्त रसोइ की सेवा करी । पातल मिलती सो वैष्णनन को लिवावते । गुसाँई जी श्रीमुख सों सराहना करते । [वार्ता २०८]

[६] कढ़ाई वारो— [रंगदेवीजी]

इनकी सेवा रसोइया जी के समानाधिकार की है । जितनी तलमां प्रिय वस्तु होवै, वे आप बनावें । बाटी, लीटी, जीरा पुड़ी, खरखरी आदि सेवा आपकी है ।

इनको स्वरूप वर्णन—

सद् पद्म केशर मनोहर कान्ति देहां,
प्रोद्यज्वलां कुसुम दीधित चारूवेलाम् ।
प्रायेण चम्पकलताधि गुणां नु शीलां,
राधे भजे तव सखीं प्रिय रंगदेवीम् ।

गुसाँई जी की वार्ता ३०—

देव ब्राह्मण बंगाली जो श्री गिरिराज जी के दर्शन कूं आये । दर्शन करि बड़े आनन्दित भये । गुसाँई जी के सेवक भये अरू पुष्टिमार्गीय रीति अनुसार सेवा करन लगे । एक दिन उड़द की दाल के बड़ा बनाये । मन में ऐसी आई कि कछु मिष्टान्न होंय तो सुन्दर । प्रभु मिष्टान्न बिना कैसे अरोगें, तो पास में थोड़ो गुड़ हतो । बड़ान के साथ गुड़ भोग धर्यो । तब श्रीजी अरोगवे पधारे और राजभोग नहीं अरोगे । और गुसाँई जी सों आज्ञा किये—मैंने राजभोग नहीं अरोग्यो । गुसाँई जी ने दुसरो राजभोग सिद्ध करायो । तब सों बड़ान के साथ गुड़ अरोगायवे की प्रथा चालू भई ।

[७] ताते ठण्डे वारो—[सुदेवी जी]

आपकी सेवा प्रभु के मुख कमल में प्यारी वस्तुन को सद् करके अरोगावनो तथा मन्दिर की प्रधान सहचरीन के संग अनुगमन करिवे की सेवा आपकी है—

इनको स्वरूप वर्णन—

"प्रोत्तप्त शुद्ध कनकच्छवि चारू देहां,
प्रोद्यत्प्रवाल निचय प्रभचारूवेलाम् ।
सर्वानुजीवन गुणोज्वल भक्ति दक्षां,
श्री राधिके तव सखीं कलये सुदेवीम् ।

गोपालदास, सांचोरा । ये गुजरात के हुते । गुसांईजी गुजरात पधारे, तब ये संग आये । गुसांईजी ने श्रीनाथजी की सेवा दीनी । श्रीनाथजी गोपालदास सों सबै बातें करते तथा जा ठिकाने चूकते, बतावते और अपने संग-संग राखते । गुसांईजी ने अपने साथ राखे । गोपालदास हू गाये है— [वार्ता ३७-३९]

आप सेवा करी शीखवे श्री हरि-भक्त पक्ष,
वैभव सुदृढ़ कीधो । या प्रकार भक्तन को पक्ष लेय सेवा सिखाई ।

एक दिन गोपालदास भीतरिया कूं वन में श्रीनाथजी ने आज्ञा कीये मोकूं भूख लगी है । जब भीतरिया ने आयके गुसांईजी सों कही । गुसाँईजी शीतल सामग्री लेय के गये । घाम में पधारे । तब गोपीनाथदासने श्रीनाथजी सों कही, तब श्रीनाथजी आज्ञा किये, मोकूं इनके हाथ की सामग्री आछीं लागे ।

रघुनाथजी ने 'नामरत्नाख्य' में कही—

"तन्निमित्तेव तत्परः ।

ये सहचरी भीतरिया है । चन्द्रावली जी एवं ललिताजी के साथ ही रहि सकें । उनकी आज्ञा बिना अरोगाय न सके । तासों इनने अरोगायो नहीं ।

[८] कोठड़ीवारे इन्दुलेखाजी—

ये जलपान की तथा सारे मन्दिर की जलपान की परिचारिका है । आपके बिना प्रभु क्षण भर न रहे । ये चन्द्रावलीजी की अंतरंग सखी हैं ।

नृत्योत्सवां हि हरिताल समुज्ज्वलाभां,
सदाडिमी कुसुम कान्ति मनोज्ञ वेलां ।
वन्दे मुदां रुचिविवर्जित चन्द्रलेखां,
श्री राधिके तव सखीमहमिन्दुलेखाम् ।

भगवानदास जी गुजरात के सांचोरा ब्राह्मण हते । गोकुल आय के गुसांईजी के सेवक भये । गुसांईजी कृपा करि श्रीनाथजी की सेवा में राखे । भगवानदास श्रीजी की सेवा शुद्ध अंतकरण सों भली-भाँति करते । राजा जितनो भय राखते, बालक जैसो ही वात्सल्य सों अधिक स्नेह राखते । एक दिन श्रीनाथजी भगवान दास सों बातें करते हुते तब गुसांईजी पधारे । गुसांईजी ने पूछी—श्रीनाथजी ने कही तब भगवानदास बोले—जो में तुच्छ जीव कहा समझों । जापे आप कृपा करें । तब समझमें परे । तब गुसांईजी बहुत प्रसन्न भये ।

[९] बाल भोगियाजी :—(भामा सखी)

बालक हितार्थ जो भोग बने ताय बालभोग कहें । यामें पक्वान्न (पक्की-सामग्री) बने । जाकों अनसखड़ी कहें । इनकी सेवा बड़ी तप साधना की है ।

महाप्रभु वार्ता ६०

भगवानदास जी भीतरिया सों एक समय श्रीजी के बालभोग की सामग्री दाझि गइ । तब गुसांईजी भगवानदास पर बहुत खीजे । भगवानदास कों सेवा से पृथक् कीने । भगवानदास गोविन्द कुण्ड पर जाय के अच्युतदास जी सो सब

वृतान्त कहे। जब श्री गुसांईजी स्नान-संध्या करन गोविन्द कुण्ड पधारे तब भगवानदास पूछरी की ओर चले गये। गुसांईजी स्नान-संध्या करके अच्युतदास को दर्शन देवे पधारे तब अच्युतदास दर्शन करत ही नेत्रन सो जल प्रवाह ह्वै आयो। यह देख गुसांईजी पूछे अच्युतदास. तुमको ऐसो कहा दुख भयो। तब अच्युतदास ने कही महाराज महाप्रभु जी को तो श्रीजी ने आज्ञा दीनी है कि जीवन को ब्रह्म सम्बन्ध करावो। साठ लाख जीवन को तुमारे द्वारा अंगीकार करनो है। आचार्य महाप्रभु तो आपको सौंपे है और आप जीवन के अपराध देखन लगोगे तो कैसे। जीव तो अपराध ही ते भर्यो है। और जीवन को अंगीकार कैसे होयगो।

तब गुसांईजी ये बात सुनिके आप भगवानदास को हाथ पकरिके गोवर्द्धन पर्वत पर ले गये और गोवर्द्धननाथजी की सेवा जा रीति सो करत हुते, ता रीति सों सेवा करन की आज्ञा दीनी। और कही : सेवा सावधानी सों करनी, सामग्री आछी भाँति सों सिद्ध करनीं। ता समय भगवानदास गद्गद् हैं गये अरु यह पद गायो।

राग पूर्वी—

तुम्हारे चरन कमल की सरन।
राखो सदा सर्वदा जन को श्री विट्लेश गिरिधरन।
तुम बिन ओर नहीं अवलम्बन भव सागर दुस्तरन।
भगवानदास जाय बलिहारी त्रिविध ताप उर हरन।

[१०] खासा भण्डारी—(सुशीला सखी)

ये कच्चे सामान तथा मेवा-मिश्री आदि समस्त वस्तून के भण्डार की अधिकारिणी है। आपकी सेवा उष्णकाल, शीतकाल में विशेष रहे। वैसे बारह ही महिना आपकी प्रधान सेवा है। पूर्व में खासा भण्डार एवं खर्च भण्डार एक ही हुतो। श्रीनाथजी मेवाड़ पधारे तबताऊं खर्च भण्डार हूं गुसांईजी एवं महाप्रभु जी के समय जैसो हुतो।

चांपाभाई भण्डारी—ये गुजरात में रहते हुते और गुसांईजी के सेवक भये। गुसांईजी इनको संग राखते। गुसांईजी कथा श्रवण करावते। गुसांईजी की कृपा सों सम्पूर्ण भाव उत्पन्न भयो तब गुसांईजी ने चांपाभाई की ऐसी बुद्धि देख बुद्धि-विपर्यय हेतु अधिकार दीनो। चांपाभाई अधिकारपनो करन लगे। फिर गुसांईजी विचारे-हमारे घर को ये का अधिकार करेगो तब माया फेरवे कौं एक समे गुसांईजी गुजरात पधारे। चांपाभाई संग हुते। रास्ता में बीरबल मिले। चांपाभाई सो बीरबल ने पूछी—गुसांईजी परदेस काय कौं करे ? तब चांपाभाई

ने कही कर्ज बहुत होय गयो। तब बीरबल बोल्यो—राजा के खजाना सौ हम व्यवस्था कराय देंगे। गुसांईजी को तुम पाछे गोकुल ले जाओ। चांपाभाई ने सब परिस्थिति तथा बीरबल की बात गुसांईजीं सों कही। चांपाभाई की बुद्धि फिरी। गुसांईजी परदेश द्रव्य केलिये एसो कहे। परन्तु आप तो दैवी जीव उद्धारार्थ पधारे है। तब आप आधी रात को ही वहाँ से कूच किये। बीरबल कूं खबर हूँ न पड़वे दीनी और चांपाभाई कों आज्ञा किये—तुम सर्वोत्तमजी को पाठ करो।

"श्रद्धा विशुद्ध बुद्धिर्यः पठेत्यनुदिनं जनः"

तुम्हारी दोष बुद्धी है गई है। इतनेन को द्रव्य प्रभु अंगीकार नहीं करे। राजा को, वेश्या को, कृपण को, ठग को, चोरी को, विश्वासघाती को, कन्या विक्रय को। तब चांपाभाई की बुद्धि शुद्ध भई। प्रभु को और गुसांईजी को एक स्वरूप समझयो।

भेटिया—

एक भोरो ब्रजवासी हुतो। गायन की सेवा करतो। एक सीधा भण्डार सो ले जातो। अष्ट पहर गायन की सेवा मन लगाय के करतो। एक दिन कोई वैष्णव कों गुसांईजी ने ठाकुरजी पधराये सो ब्रजवासी ने देख्यो। गुसांईजी सों याने हूँ ठाकुरजी पधरावन की विनती करी। गुसांईजी ता समय न्हाय के पधारत हुते। जब आगे एक पत्थर पड्यो हतो। वा पत्थर कूं गुसांईजी की खड़ाऊँ की ठोकर लगी। पत्थर दूर जाय पड्यौ। वहाँ ब्रजवासी ठाड़ो हुतो। गुसांईजी "परे परे" ऐसे कहिके भीतर पधारे। तब वो पत्थर ब्रजवासी ने उठाय लीनो। और वो ऐसो समझयो कि मोकूं श्री गुसांईजी ने ठाकुरजी पधराय दीने, या प्रभु को नाम "परे" होयगो। फेर मन में समझी कि सीधो तो एक आवे है सो 'परे' कैसे खायेगो और मैं कहा खाऊँगो। ऐसो समझ के भण्डारी सों दो सीधा लाय के फेर रसोइ करी। वाने दो पातल करी और बोल्यो—आवो भाई परे, एक पातल तेरी और एक मेरी। ठाकुरजी आये नहीं सो ब्रजवासी कहन लग्यो—भाई, तू आयके पातर सम्हार ले। कछु कमती नाहिं। नाहीं तो मैं दोनों तालाब में फेंक देऊंगो। ठाकुरजी वाको भोरपन शुद्ध भाव देख पधारे और जेमन लगे। अब तों सदा वाके संग रहैं। सूरत को भेंट लेवे गयो तबहू संग रहे—आदि।

[११] पानघरिया—[पद्मा सखी]

ये पद्मा सखी प्रभु के अन्तरंग सहचरीन में है इनके भाव बड़े ऊँचे हैं। आचार्य वल्लभ महाप्रभु स्वयं दामोदरदास सम्भल वारे की वार्ता तीन में आज्ञा करे—प्रसंग १।

"भोग सराय बीड़ा समर्पन लागे तब पान आचार्य श्री ने हरे देखे, तब आज्ञा
ये—दामोदरदास, हरे पान कबहूँ न समर्पने। उत्तम सामग्री तो ठाकुरजी को
पिये। प्रभु उत्तम वस्तु के भोक्ता है।" पीछे वे स्त्री पुरुष भलीभाँति सेवा करन
। मधुसुदनदास :—

ये एक समय गोकुल आये आत्म निवेदन करायो। सेवा सीखी, गोकुल में
भिक्षावृति करके निर्वाह करते। गुसाँई जी ने पूछी भिक्षा कहाँ कहाँ की लावो
इतनेन की भिक्षा न लेवे की कही—हमारे सेवक तथा भट्ट, हमारे नौकर।
के घर सों भिक्षा न लेनी। कारण के, इनके यहाँ हमारो द्रव्य जाय। मधु-
नदास की चित्तवृति स्थिर करन हेतु पानघर की सेवा दीनी। उनने जन्मभर
नघर की सेवा कीनी। (गुसांईजी सेवक वार्ता ३२)

[१२] दूधघरिया ग्वालजी [चन्द्रभागा जी]

ये चन्द्रभागा जी रसस्वरूपा शुद्ध सुधाविर्भाव को सरूप है। दूध की सारी
मग्री तथा धैयादि इनके हाथ सों प्रिया प्रीतम अरोगें। कछु अन्तराय पटकवे
एक समे नित्यनेग में दो हांडा दूध के कम लिए। तब श्री गोवर्द्धनधरण कूं
न न भई। आप कल्याण भट्ट की पुत्री देवका कूं कृतार्थ करवे आन्योर पधारे
र सोने की कटोरी संग लेके पधारे अरू बोले—देवका देवका दूध देउ। हम्बे
राज। दूध तो साढे चार पैसा को देहुं। तब वो बोली—साढे चार पैसा सेर
ँगी श्रीजी ने कबूल किये और देवका ने सोना के कटोरा में एक सेर दूध
रायो। फिर आप बोले—ये तो फीको है। देवका बोली हम्बे महाराज बूरो रंचक
य। हाँ महाराज दूध चार आना को और खाण्ड हूँ ल्यो। फेर चार सेर दूध
के अरोग्यो। अरू आज्ञा कीनी—पैसा तो हम भूलि आये ले याके बदले सोना को
टोरा राख लेऊ। आप कटोरा पधराय मन्दिर पधारें अरू पौढ़े। सवेरे सोना
हल्ला मच्यो, तब गोवर्द्धनधर गुसाँई जी सों आज्ञा किये—दूधरिया ने दो हांडा
कम लिए, तासों मैं आन्योर में कल्याण भट्ट की छोकरी देवका के यहाँ दूध
आयो और कटोरा तहाँ धरि आयो। गुसाँई जी ने कल्याण भट्ट सों कही—
भाग्य धन्य हैं। तथा दूधधरिया पै खीजे और कटोरा मंगायो। आज्ञा किये—
भु के अरोंगवे की वस्तु में कमी कबहू न करनी जो विधान बंध्यो तामें।

सेवक खोवा के लड्डू बाँधते भये गिनत जाँय। तब श्रीजी ने गुसाँईजी सों
ही—खोवा तो मैं अरोग्यो नहीं। ये तो नेगीन के नाम सों सिद्ध किये हैं।
दिन सों श्रीजी में खोवा खुल्यो आवन लग्यो।

या प्रकार ये द्वादस निकुञ्ज की द्वादश सहचरी प्रधान मानी जाँय। ताहीं
व सों ये सब सेवक स्वरूपात्मक भये।

फूलघरिया [रसप्रकाशिका] श्री जमनाजी की अंतरंग सखी
श्यामदास—

गुसाँई जी द्वारका पधारे तब श्यामदास सेवक भये। श्यामदास बहुत दिन रहि के गोकुल आये। श्री नवनीतप्रियजी के दर्शन किये फेर गोपालपुर आये तब श्यामदास ने गुसाँईजी सो विनती कीनी—मेरी इच्छा है मैं जन्म पर्यन्त यहाँ रहूँ। मोकूँ कछु सेवा बताओ तब गुसांईजी ने श्यामदास को फूलघर की सेवा बताई तब श्यामदास नीकी भाँति सेवा करते। और श्यामदास ने गुसाँईजी सों बिनती कीनी महाराज मोकूं फूलन को स्वरूप समझाओ, तब गुसाँईजी आज्ञा किये ये फूल ब्रजभक्तन के सरूप जैसो है इनको चित्त पुष्प है श्री ठाकुरजी को अंग स्पर्श करत है। ये सुन श्यामदास बहुत प्रसन्न भये। फूलन को ब्रजभक्तन को सरूप मान पांव न लगावते, हाथ धोय के स्पर्श करते, कुम्हलाय न जाँय ऐसे रखते। फेर एक दिन गुसाँई जी सों पूछी महाराज फूलन को ऐसो सरूप है तो उनको सुई कैसे पिरोई जाय। तब गुसांईजी आज्ञा किये सूई सूची है ब्रज सम्बन्धी सूचनार्थ है और वो सूचना ब्रजभक्त सुन के मन पिरोवे। प्रभु हमकूं शीघ्र संयोग रस को दान देयगें, ये बात सुन श्यामदास बहुत प्रसन्न भये। अरु एक दिन श्यामदास कूं फूलघर में असंख्य ब्रज भक्तन के दर्शन भये, श्यामदास पहचाने नहीं तब ब्रजभक्त आज्ञा किये—जो तुम पुष्पन की माला अंगीकार कराओ वो हमारो ही सरूप है। हम तेरे पर प्रसन्न भये हैं—हम तोकूं कछु देवे आये हैं तब श्यामदास हाथ जोड़ विनती किये—आपके चरनन में मेरो भाव बन्यो रहे। फेर श्यामदास ने गुसांईजी सों या घटना की विनती कीनी। गुसांईजी आज्ञा किये जिनको छेल्लो जन्म होवे विनकूं ठाकुरजी अन्तराय नहीं राखें। ऐसे जीवन के लिये ये मांग राख्यो हैं। श्यामदास बहुत प्रसन्न भये। तासों ही फूलघर में ही माला छोटी बड़ी होय। सो वहाँ जाय के फूलघरिया सेवा करें।

[१४] शाकधरिया जमनाजी की प्रिय सखी रसात्मिकाजी

इनकी सेवा सब सों ज्यादा तथा सब सो अपूर्व है समस्त सेवा की प्रधान सखी है। इनको परिकर हूं ज्यादा है। ये जमुना महाराणी के अन्तर्वर्ति होयवे सौं द्वादश सहचरी संग राखें। इनकी सेवा सों चतुर्विध फल प्राप्ति होय के बालगोविन्द को सानुभव होय तथा निकुञ्ज लीला के दरसन होंय।

वार्ता गुसांईजी की ८६ आगरा निवासी निष्किञ्चन की। जो बदाबदी में खरबूजा खरीद के लायो। गादी पे श्री नबनीतप्रियजी खरबूजा सों खेले।

मथुरा निवासी ने आम धोय-धोय भोग धरे [वार्ता ६३]

वार्ता १३—आचार्य महाप्रभु—

सेवक गदाधरदास ने सब वैष्णव प्रसाद लिवायवे बुलाये। साग सब्जी न हूती तब गदाधरदास बोले—ऐसो कोई वैष्णव है जो साग ले आवे। तिनमें एक वैष्णव वेणीदास को भाई माधोदास हूं बड़े विषयी हुते, वाने वेस्या घर में राखी हुती। तिनने कह्यो—मैं ले आऊँगों। तब गदाधरदास ने कही भले लाओ। माधवदास गये और बथुवा की भाजी लायें। रसोई में नीकी भाँति सो दीनी। रसोई सिद्ध भई, भोग समर्प्यो, भोग सराय अनवसर किये। वैष्णव प्रसाद लेवे बैठे। भाजी अति स्वाद वारी भई। माधवदास कूं गदाधरदास ने आशीर्वाद दियो—तुम में हरि भक्ति दृढ़ होय। गदाधरदास के आशीर्वाद सों माधवदास परम भगवदीय भये अरु कामासक्ति छूटी। शाकघर की छोटी-मोटी सेवा भावात्मक है तासों शाकघर राख्यो।

[१५] खासा जलधरिया—

ये खासा जलधरिया जमनाजी की परिकर की सहचरी है। तासों ही पद पद में इनको वर्णन मिले है सो या प्रकार कृष्णदास जी कहत है—"वृन्दावन कुञ्जन मेंधि, खसखानो रच्यो सीतल बयार झुक गोखन बहत है। सुगन्धी गुलाब जल नाना बहु भाँतन के लेले धाम-धाम—आय सखी सब छिरकत है। धारधुरवा छूटत तहाँ नीके दादुर मोर पिक सुक जु फिरत है। कृष्णदास फुहारे छूटे मानो मनमथ लूटे झुक-झुक धार हौदन भरत है।"

वार्ता गुसांईजी की तथा महाप्रभु की—परमानन्ददास जी को शरण दिवायवे वारे नवनीतप्रिय के दर्शन करायवें वारे खासा जलधरिया।

आचार्य महाप्रभुन के सेवक जलधरिया कपूर छत्री। सो उनकी राग में बहुत आसक्ति हुती। परि सेवा में अवकाश न मिलतो। परमानन्ददासजी के प्रयाग में कीर्तन सुनिवे वैष्णव आवते। तब एक वैष्णव प्रयाग ते अडेल आयो और कह्यो, जो आज एकादशी है।—परमानन्ददास आज जागरण करेंगे। यह सुनि के जलधरिया ने अपने मन में विचार कीनो, आज परमानन्ददासजी के कीर्तन सुनवे चलनो। सो वे जलधरिया अपनी सेवा में पहुंच रात्री को अपने घर आये। मन में विचार कियो—नाव तो अब मिलेगीं नाहीं। तब वे पैरि के वहाँ पहुंचे जहाँ परमानन्दजी कीर्तन करत हुते। परमानन्दजी कूं कपूर छत्री की गोदी में बैठे श्रीनवनीतप्रिय के दर्शन भये। सारी रात कीर्तन के साथ—माधुरी मूरत नैनन में खटकती रही। सवेर होते सेवक तो सेवा में आये इनकूं चैन न परी। ये स्वयं आय आचार्य के सेवक इनके द्वारा भये।

वार्ता अष्टम लालजी—जल भरवे के कारण कन्धन में कीड़ा परिगये अरु कीड़ा उठाय पुनः वाही स्थान में धरते। दयालु गुसांईजी ने पुत्रवत् मानिके सिन्ध के जीव कृतार्थ करवे कूं नाम निवेदन की इनकूं आज्ञा दीनी।

[१६] पातल मांज्या—(गुसांईजी को सेवक नारायणदास वार्ता १२५)—सो वे नारायणदास गोकुल आय के रहे। जन्म पर्यन्त सेवाकरी। नारायणदास कूं ऐसी सेवा की आसक्ति हुती जैसे अफीमची कूं अफीम बिना न रह्यो जाय। ऐसी सेवा करते नवनीतप्रिय इनके पास बैठे सिखावते, जगावते, सेवा बतावते। ये आन्योर गाँव के हुते।

(४)

कीर्तनियान को स्वरूप तथा भाव वार्ता :—

१	कीर्तनिया को बड़ो मुखीया (१७)	गोविन्द स्वामी	....	चन्द्रावलीजी
२	वीणकार जी (१८) आचार्य वार्ता ८३	परमानन्ददासजी	....	ललिताजी
३	पखावजी (१६)	नन्ददासजी वा० ४	....	विशाखाजी
४	सारंगिया (२०)	कुम्भनदासजी ८१	....	चन्द्रभागाजी
५	बाजा बजायवे वारो (२१)	कृष्णदासजी ८४	....	चम्पकलताजी
६	दूसरो मुखिया (२२)	चत्रभुजदासजी ३	....	भामा सखी
७	कीर्तनिया (२३)	छीत स्वामी २	....	सुशीलाजी
८	कीर्तनिया (२४)	सूरदास ८२	....	चित्रा सखी

बसन्त में एक पद अष्ट सखानके सहित या प्रकार है:—

खेलत बसन्त विट्ठलेशराय। निज सेवक सुख देखे आय।
श्री गिरधर राज बुलाय। श्री गोविन्दराय पिचकारी लाय।
श्री बालकृष्ण छवि कहि न जाय। श्री गोकुलनाथ लीला दिखाय।
श्री रघुनाथ अरगजा अंग लगाय। घनश्याम धाम फेंटन भराय।
सब बालक खेलत एक दाय। तहाँ सूरदास नाचत हैं आय।
परमानन्द ढोरे गुलाल लाय। चत्रभुज केशर माटन भराय।
छीत स्वामी बूका फेंकत हैं आय। नन्ददास निरखें छबि कहि न जाय।
गावे कुम्भनदास वीणा बजाय। सब बालक गोविन्द गिरिकैं धाय।
कोऊ नाचत देह की दसा भुलाय। सब बालक हो हो बोलत आय।
उड्यो अबीर गुलाल धूमर मचाय। पिचकारी इत उत छिरके जाय।

कोऊ फेंकत फूलन अपने भाय । कोऊ चोबा ले छिरके बनाय ।
बाजे ताल मृदंग उपंग भाय । विच बाजत मुहचंग मुरली गाय ।
सब बालक भीने रंग चुचाय । गोकुल घर घर सुखहिं छाय ।
शोभा कहा कहों केहि बनाय । यह सुख सेवक हि देखे आय ।
सुरगन कुसुमन तंह बरखें आय । तहाँ कृष्णदास बलिहारी जाय ।

[२५] अधिकारी जी कृष्णदास जी—(चन्द्रावलीजी की अनन्य प्रिय सखी ता) प्रसंग दोय—और प्रथम सेवा श्रीनाथजी की बंगाली करते तब आचार्य भु ने आज्ञा दीनी । जो तुम गोवर्द्धन रहो सेवा टहल करो । तब कृष्णदास ारी भये । जो आज दिन लों कृष्णदासजी की गादी तथा कृष्ण भण्डार ो जाय है । इनके अनेक पद तथा अनेक लीला हैं । ये रासरसिक शिरोमणी सलीला में निमग्न रहत हुते । (आचार्यजी की वार्ता ८४)

[२६] प्रसादी भण्डारी—श्लोकदासजी सांचोरा—सो वे श्रीनाथजी के की रसोई करते और सबन को आप परोसते । ताते उत्तम श्लोकदासजी ब 'सेवक' महतारी कहते । गुसांईजी बहुत प्रसन्न रहते । वे उत्तम दासजी आचार्य महाप्रभुन के ऐसे कृपा पात्र हैं । जो सेवकन को प्रभुसरूप वा करते ।

"भोजन भली-भाँति हरि कीनो,
परमानन्द उबर्यो पनवारो बाँट सबन कों दीनो ।"
"हँसत परस्पर करत कलोल,
शेष प्रसाद रह्यो सो पायो परमानन्दहिं दीनो ।"

[२७] प्रसादी सखड़ी रसोई के सेवक तथा मुखिया को स्वरूप भाव वार्ता दवे सांचोरा—सो वे ईश्वर दवे श्रीनाथजी के सेवकन की रसोई करते और श्लोकदास हूं सेवकन की रसोई करते । उत्तम श्लोकदास की देह छूटी तब ी ने ईश्वरदास दवे को नाम उत्तम श्लोकदास राख्यो । सो वे श्रीनाथजी कन की रसोई करत अपुनी गाँठ ते घी मंगाय परोसते । ताते सेवक इन्हें तारी कहते । ये बात गुसांईजी ने सुनी, वे बहुत प्रसन्न भये । एक दिन दवे को गुसांईजी ने पूछी तुम अपनी गाँठ ते द्रव्य खर्च करि घृत मंगाय काहे ोसत हो, तब ईश्वर दवे बोले महाराज, प्रभु सेवा करत इनको श्रम होत , तासो ये करत हौं । गुसांईजी बहुत प्रसन्न भये–आज्ञा किये कछु माँगो । श्वरदास बोले—आप मेरे पर अप्रसन्न होवें । वैष्णवन ने पूछी ये कहा माँग्यो, श्वरदास बोले प्रसन्न होय और दोष बनि आवे, तो अप्रसन्न होय । या भय करो तो अप्रसन्नता हूं प्रसन्नता में मिले । वैष्णव चुप करि रहे ।

"चित्र विचित्र ब्रज की ग्वाल मण्डली रचना रची सो रची" यह प्रसाद बाँटवे वारेन को तथा लेवे वारेन को स्वरूप—

"चित्र विचित्र रचना रची सो रची" आगे मुरारीदास प्रभु भोजन करि बैठे; शेष लेन को सहचरी निकट आय ललची । "आज दधि मीठो मदन गुपाल, जिन नहीं पायो सुनो रे भैया मेरी अंगुरिन चाट ।"

[२८] उस्ताजी—आचार्य वार्ता । पूरनमल खत्री को मन्दिर सिद्ध करा-इवे की आज्ञा । द्रव्य बहुत हतो निबट्यो, फिर लायकै पूर्ण कियो ।

प्रसंग दो में चन्दन धरन की आज्ञा भई तथा प्रसादी वस्त्र दिये । तासों ही उस्ताजी को विदा में वस्त्र मिले । श्रीनाथजी को प्राकट्य वार्ता-हीरामणी उस्ता आगरे वारे ने महाप्रभु सों आज्ञा माँग मन्दिर को नक्शा बनवायो अरु शिखरवन्द बनके आयो तब आचार्य दामोदरदास सों आज्ञा किये—श्रीनाथजी की इच्छा शिखरवन्द की दीसत है । यवन उपद्रव होयगो तब पधारेंगे । यहाँ तीन शिखर है—देव शिखर, आदि शिखर, ब्रह्म शिखर । श्रीजी की आज्ञा सो उस्ताजी को कारखाना भयो ।

[२९] पोरिया—गुसांईजी वार्ता १३४

रूपापोरिया—ये सिंह पोर में बैठते । रात को धोल गावते । एक दिन गोविन्द स्वामी सुनी । कही बेसुरो मत गाऊ, तेरो राग आछो नहीं । रूपा चुप करि रह्यो । वा रात में प्रभु रात भर जागे । प्रातः गुसांईजी जगाये तब अरुण नयन देखे । पूछी, तब श्रीजी आज्ञा किये मोकूं नींद नहीं आई । रूपा ने धोल नहीं गाये । गुसांईजी ने रूपा सों पूछी । रूपा ने कही गोविन्द स्वामी ना पाड़ गये । गोविन्द स्वामी सो गुसांईजी ने कही तुमने रूपा को गावन क्यों न दिये श्रीजी कूं नींद नहीं आई । गोविन्द स्वामी ने कही जो खाण्ड-गुड़ एक भाव है । तब गुसांईजी ने कही "कर्म ते कृपा न्यारी है ।" गोविन्द स्वामी चुप करि गये ।

प्रसंग दो—रात्रि को असंख्य ब्रज भक्तन के साथ श्रीजी रास करवे पधारे, रूपा ने रोके, गहना सम्भाल के भेजे संग-संग गायो, रास के दर्शन किये । आभू-षण टूटे सो अवेरि लायो, गुसांईजी को दिये । या प्रकार अनेक भाव अरु वार्ता है ।

[३०] परछना—ब्रज वासिन को बेड़ा ।

ब्रजवासी जाने रसरीति,
जिनके हृदय और कछु नाहीं नन्द सुवन सों प्रीति ।

करत महेल में टहल निरन्तर जात यामें पल बीति
सर्व भाव आत्म निवेदन कर रहे त्रिभुवनातीति
उनकी गति ओर नहिं जानत बीच आवनकी भीति
कोऊ कलहे दास परमानन्द गुरू प्रसाद परतीति ।

श्रीनाथजी की प्राकट्य वार्ता पृ० १५—पीछे आचार्य महाप्रभु ने सद्दू पाण्डे आदि ब्रजवासीन सो कह्यो—यह गोवर्द्धनधरण श्रीजी मेरे सर्वस्व है इनकी सेवा में तुम तत्पर रहियो और सावधानी राखियो और जा भांत श्रीनाथजी प्रसन्न होय सो करियो ।

[३१] **गौशाला के मुखीया**—गोपीनाथदास ग्वाल (वार्ता गुसांईजी ३७) वे गाय चरावते । श्रीनाथ जी गोविन्द स्वामी आदि सखान के साथ खेलते, छाक अरोगते । एक दिन गोपीनाथदास ग्वाल कू भूख लगी । वा ने श्रीनाथ जी सो कही—तुम्हें तो विट्ठलनाथ जी लडुवा खवावें । कबहू हम हूं को दियो करो, तब श्रीजी बोले काल लाऊंगो । दूसरे दिन गोपीवल्लभ में सो आठ लडुवा लेके श्रीजी गोपीनाथदास के पास पहुंचे और उनको दिये सात राखे, एक में से तोड़ि के खाये । बाकी गुसांई जी को लायके दिये । ता दिन सो सेवकन को बन्धान भयो और आज्ञा भई ।

गौ सेवक भक्त—(वार्ता १६४) कुम्भनदास को बेटा कृष्ण दास, वार्ता ५६ एक पटेल की वार्ता (वार्ता १३६) घास में नाचत लालबिहारी

[३२] **समाधानी एवं उनकी भाव भावना**—सब प्रकार सो समझावे, सन्तोष करावे तथा वैष्णव प्रभु-गुरू की सेवा तन-मन-धन सों करिके प्रसन्न करिके सन्तोषित करिके समाधान करनो ताकूं समाधानी कहयो है । अष्ट सहचरीन में ये रंगमंच सिद्ध करनबारी मानी है । इनकी कई वार्ता हैं कछु उधृत करें ।

(वार्ता ४) पद्मनाभदास कन्नोजिया ब्राह्मण (प्रसंग ३.)

एक समय आचार्य महाप्रभु गोकुल ते अडेल जात हुते । एक व्यापारी [illegible] वस्तु लेके साथ में चल्यो । आचार्य तो बीच में कन्नोज में पधारे । व्यापा[illegible] कछु ते चोर आय परे और लूट लीनो । आचार्य महाप्रभु तो दामोदरदास [illegible] को पीछे यहाँ पधारे रसोइ करि प्रभु भोग समर्पित करत हुते । पीछे ते [illegible] सम्भल वारे के पीटत आयो अरू पूछयो—महाप्रभु कहा करत है तब प[illegible] वो व्यापारी रोवत-भोजन करत होयेंगे । पद्मनाभदास ने सोच्यो, आचार्य [illegible] द्मनाभदास ने कहयो, करेगें । दोय घड़ी अवेर होयगी ताते वा व्योपारी [illegible] महाप्रभु सुनेगें तो भोजन न [illegible] को हाथ पकरिके पद्मनाभदास

एक व्यापारी कें जो साहू हुते तिनकी दुकान पे ले गये और साह ने दोऊन को आदर कियो—पधारो, आज्ञा करो । तब पद्मनाभदास ने वा साहू सो कहयो—जो या व्यापारी को इतनो द्रव्य दियो चाहिये । द्रव्य को खत-पत्र ब्याज हम देयगें । पद्मनाभदास पै साह की अटूट श्रद्धा हुती । वा ने कही—जितनो द्रव्य चहिये लेऊ खत पत्र की कहा बात है । पद्मनाभदास बोले, पहले खत पत्र लिखाऊ फेर द्रव्य देऊ । पद्मनाभदास ने खत पत्र लिख दीयो । साहू ने वा व्योपारी कूं द्रव्य दे दियो । तब व्योपारी द्रव्य लेके घर गयो । पद्मनाभदास घर आये । आचार्यश्री ने पूछी—पद्मनाभ, तुम कहां गये हुते । पद्मनाभ बोले एक काम को गयो हुतो । आचार्यश्री तो अन्तर्यामी है । आचार्यश्री ने कही जो हम व्यापारी को संग तो लीने न हुते । वा को माल देनो तो पीछे रहयो । तेने बुरी करी ऋण लेके पैसा दीनो । पद्मनाभदास बोले—व्यापारी पुकारतो । राज भोजन छोड़ते, दोय घड़ी अवेर होती । मेरो जन्म वृथा होतो । ऋणतो में मोकल देऊंगो । आचार्य ने कही धर्म तेने गहने धर्यो ।

तब पद्मनाभदास बोले ऐसो गाढो लिख दीनो जो बिना दिये न जाय । पीछे आचार्य अडेल पधारे । पद्मनाभदास एक राजा पै गये । राजा ने बहुत सन्मान कियो । राजा ने कहयो मोकूं कछु सुनाऊ, तब पद्मनाभदास बोले—भागवत तो नहीं सुनाऊंगो । कहो तो महाभारत सुनाऊं, महाभारत सुनायवे लगे सो युद्ध के प्रसंग में वीर रस छाय गयो । धक्का मुक्की होन लगी । फेर शान्त रस कह्यो । पद्मनाभदास कूं बहुत द्रव्य मिल्यो । पाछे वा साह कूं चुकायो । खत फारि डारो । पर गुरू को श्रम न दीनो । (वार्ता गुसांई जी की ६०)

परमानन्द सोनी—सो वे परमानन्द सोनी सम्प्रदाय के सभी ग्रन्थ भली-भांति जानते । सब समक्ष के हृदय में राखते । नित्य वार्ता सुनते जो कोई वैष्णव आवतो, वार्ता करतो—गुसांई जी आज्ञा करते—परमानन्द सों पूछं लेऊ । एक समे चार पण्डित प्रश्न करवे आये । उन्हेहूं निरूत्तर करदिये । वे लौटि गये । सब प्रकार समाधान किये ।

छड़ीवार, चरणामृतवारे, सोहनीवारे, झापटिया, गहनाघरवारे, अन्य पौरिया दिन में सेवा-प्रकार सहचरीन के अन्तवर्ती परिकरन की होयवे सों यहाँ वार्ता नहीं लिखी गई ।

छड़ीदार को स्वरूप (भावना)—

आप चन्द्रावलीजी की प्रिय सखी है मधुरेक्षणाजी । इनकी सेवा सतत द्वार पर आज्ञानुगामी रहनो तथा सबन के आगे सावधानी पूर्वक निकुञ्ज में पधारनो ।

झापटिया—स्वरूप में सखा सहचरीन में ललिताजी को परिकर की चतुर चार सखी—

शशिकला—रतिकला—तुत्केली—बहुला।

चारो दिशि ध्यान राखि ठाड़े रहि लीलावगाहन करनो।

चरणामृत वारो—जमुनाजी की अन्तरंग सखी। ए रस प्रकाशिका जी को सरूप है। उनकी वार्ता महत्व बहुत है।

सोहनी वारो—ये हू जमुनाजी की परिचारिकान में गुणगूढ़ा है। इनकी वार्ता गुसाईजी की में तीसरी है।

गहनाघरवारे तथा अन्य पोरिया अन्य सेवक निकुञ्जेश्वरी की सहचरी तत् तत् आज्ञानुगामी है। परचारक हू ताही भाव सों है।

(५)

अष्टयाम को सेवा प्रकार तथा श्रीनाथजी में होयवे वारी विशेषताएँ तथा भावना :—

प्रातः शंखनाद से पूर्व व राजभोग के समय जितने बीन बजें (नव वर्ष सो दशहरा तक) वे ध्रुव बारी के नीचें बजें। कारण के प्रभु बाहर पोढ़वे सों कुञ्ज द्वार पर ललिताजी बीन बजावें, मधुर-मधुर धुनन सो प्रभु जागें। शीतकाल में तथा बाकी समय में पातलघर के सामे तथा शाक गली के आगे बजें। फेर भीतरिया आयवे की खबर जाय। फेर प्रधान सेवक वर्ग भीतर तारो खोल के प्रवेश करि सोहनी मन्दिर वस्त्रादि भीतर की सेवा करे। फेर प्रभु जगावन हेतु शंखनाद होय। वह पातलघर सों तीन बार शंख ध्वनि होय वो तीन-तीन वेर गुञ्जार होय। और घरन में घंटानाद होय यहाँ शंखनाद होय। श्रीजी में अरु नवनीतप्रियजी में घंटानाद न होवे को कारण—प्रभु को शंख बहुत प्रिय है। "पांचजन्यं ऋषीकेशः" "शंखध्वनिर्दानव दर्प हंता" तासों प्रभु जागें। सेवक वर्गन के शंख ध्वनि सुनत ही काम-क्रोधादि भाग जाय और सेवक वर्ग तन्मय होय के अपनी-अपनी सेवा करन लगे। तीन वेर बजवे को आशय या प्रकार है—सात्विक, राजस, तामस भक्तन को ध्वनि सुनत ही जोश आय के सेवा में तत्परता होय। शंखनाद की खबर गादी जी में जाय, सबन को हल्ला-गुल्ला शोर नहीं करन देय, जब तक मंगल भोग नहीं आवे तब तक। यासें ही सिंह पोर को किवाड़ नहीं खुले। भीतर सेवक वर्गन के अलावा प्रवेश बन्द रहे ताको आशय या प्रकार है—यह मंगला बालभाव सों पूर्ण होवे। सो कारण प्रभु उठत ही यदि भक्तन के,

ग्वाल बाल के, सखान के संग खेलकूद में लग जाँय, तो कलेऊ न करें यासों। और रात्री सों अलसाये श्रमित बालक मचलें या प्रसन्न वदन उठे तो भीड़ देख घबरावे तथा मचल जाय यासों। उठते ही बिराज कर पूर्व सर्वप्रथम मंगल भोग ऋतु अनुसार, मर्यादानुसार आवे।, ताके बाद पट खुले, बीन अन्दर आयके बजे। मंगलभोग सिद्ध भये पीछे ठाकुरजी कूं जगावे। ताको आशय ये है—ठाकुरजी कूं उठते ही भोग अरोगावे। मंगलभोग आये बाद ही कीर्तन प्रारम्भ होय तथा सब द्वारन पे दर्शनार्थी भक्त ठाड़े होय गुणगान करे।

कीर्तन में सर्वप्रथम महात्म्य के पद रीति प्रमाणे, महाप्रभु वल्लभ स्तुति. विट्ठलेश गुणगान बाद पद जगायवे के। फेर मंगलभोग के पद गान ऋतु अनुसार होय। **यहाँ जमुनाजी के पद नित्य नहीं होय**। ताको कारण या प्रकार है—जमना जी श्रीनाथजी की सेवा में सदा विराजमान रहे। ये पद बारह महिना तानपुरा सो होंय तथा फेर बीन बजे ताको आशय यह है—प्रभु मधुर तानन सों जागें तथा अरोगें। भीतर प्रेष्ठ सखी सेवारत रहें और सखी मंगलगान करे। भोग आवे बाद जमनाजी की झारी पधारे। कारण यदि बालक प्रथम जल पीवें तो पेट में भारी होय। तासों मंगलभोग अरोगनो सुरु भये बाद झारी भरकै धरे। मंगलभोग अरोगे उतने भीतर शय्यामन्दिर में सेवा करे।

मंगला में शृंगारक्रम—चैत्र शुक्ला १ से उपरणा धरे। वैशाख सुद ७ सो आड़बन्द धरे। रथ यात्रा तक आड़बन्द आवे। पीछे आषाढ़ी पूनम तक आड़बन्द ही आवे किन्तु जब ठाड़े वस्त्र आवे तब उपरणा धरें। श्रावण वदी १ सो आश्विन सुदी पूनम (शरद् पूर्णिमा) तक अथवा जब तक शीत नहीं पड़े तब तक उपरणा धरें।

ठंड पड़वे पर धुधी, खोल, दत्त, धरे। प्रबोधिनी से गद्दल धरे। ज्यादा ठंड में दो या तीन गद्दल भी धरे। श्री मस्तक पै पाग एवं कुल्हे ही धरावें। फेंटा ३ दिन ही धरे—ज्येष्ठ कृष्णा २ तथा ज्येष्ठ कृष्णा १० एवं अषाढ़ शुक्ला १५। फेंटा सफेद ही धरे। टोपा नहीं धरे।

आभरण—कर्णफूल, श्री मस्तक की लड़, श्री हस्त में मोरी की पोंची एवं कड़ा, चरणन में नुपुर धरे, कंठी एक रहे। कभी-कभी शीशफूल भी धरे। मंगला में फूल माला तथा फूल वगेरह नहीं आवें तथा वेणुजी भी न धरावें न बीड़ी अरोगावें। ताको आशय यह है—शृंगार-पुष्पमाला आदि ब्रज भक्तन के भाव सों होय। ब्रज भक्त दर्शन करें और सेवा करें तासों अंग पे न धरे। पिछवाई नहीं आवे, तकिया-गादी एवं खण्ड पाट रहे। वेणु पास में राखे श्री हस्त में न धरे।

कारण—यदि बजावें तो सब मोहित होय जाय। तासों सेवा में विघ्न पड़े। यह मंगला मातृ भाव युक्त है, पास लेके जसोदाजी बैठे। व्रज ललना दर्शन करें।

शय्या मन्दिर की सेवा सिद्ध भये बाद अथवा घड़ी एक बाद मंगल भोग सरवे की खबर झापटिया करवे जाय। बाल भोग सरवे लगे मंगला आरती की खबर जाय। मंगल भोग किवाड़ बन्द में सरे। बाहर बीन बन्द होय जाय तथा कीर्तनियान को मुखीया एवं बीनकार ही 'मंगलं-मंगलं' अष्टपदी गावे। तथा ऋतु अनुसार पद गावे। आचमन मुख वस्त्र होय बीड़ा पास धरे। झारी स्वामिनीजी के भाव सों पड़गी पें शय्या मन्दिर तरफ आवे। बीड़ा कांच मन्दिर आड़ी आवे। दर्शन खुले पे सन्मुख उपरोक्त दो ही जने गावे। ऋतु अनुसार पद एक गावे एक झेले। मंगला आरती होय।

आरती प्रकार तथा स्वरूप भावना पद्धति—नित्य सेवा में आरती चार होय। दो आरती मातृ भाव भावित। दो सहचरीन द्वारा कांता भाव युक्त। मंगला एवं संध्यार्ति—ये दो आरती माँ जसोदा करे। राजभोग एवं शयनार्ति युगल छवि की सहचरी करे।

ये आरती दो प्रकार की होय—

(१) **थाली की**—जामें मोतीन के द्वारा कांसी की थाली, अथवा चांदी की थालीन में उत्सव प्रकार की रंग-बिरंगे कलात्मक ढंग पे दिवला धरि के चार बाती, आठ बाती, सोलह बाती की।

(२) **खण्ड वारी**—ये खण्ड ऊपर नीचे तीन होय। जामे ऊपर चार बाती। अक्षय तृतीया सो अषाढ़ सुदी १५ तक चार बाती की आरती होय है। गर्मी अधिक होय तो राजभोग एवं संध्यार्ति मणिकोठा सो होय। शयन बन्द जब से होय, तब से लेके विजयादशमी तक दो खण्ड की आरती होय। ऊपर की चार और नीचे की सात बाती होय। विजयादशमी सों शयन बन्द होवे तक तीन खण्ड अर्थात् ४-७-६ की आरती होय।

आरती क्यों तथा काय कों कहें—

"अमंगलं निवृत्यर्थं मंगलावाप्तये तथा,
कृतमारार्तिकं तेन प्रसिद्ध : पुरुषोत्तमः ॥१॥

ये आरती चार प्रहर की चार आरती होय। आरती बार-बार, उतारें, दोष परिहार रात्रि के दोष, निशाचरन की दृष्टि-निवारणार्थ मंगला आरती, वन वन में कन्हैया घूमें, ठौर-कुठौर पाँव परे तासों संध्या घर पधारवे पर द्वार पर माता जसोदा संध्या आरती करे।

राजभोग में निकुञ्ज में दोनों स्वरूपन को मध्याह्न की आरती, व्रजललना करें तथा शयन में व्रजललना शय्यामन्दिर में बैठाय के आरती करवे के बाद सों शयनार्ति होवें।

बातीन के प्रकार—"वर्तिका सप्तवा पंच वा कृत्वा दीपवर्तिका" पशु-पक्षी दोष परिहारार्थ; देव मनुज दोय परिहारार्थ करे है।

प्रथम खण्ड में चार बाती—

निवृति—**प्रमाण, प्रमेय, साधन, फल।**

उद्वेग—**प्रतिबन्ध-लोकिक भोग निवृत्ति।**

(१) मन की अनन्यता पर उद्वेग (२) तन-मन की अनन्यता पर प्रतिबन्ध (३) इन्द्रियन की अनन्यता पर लौकिक (४) फल प्राप्ति सेवोपयोगी।

निवृत्ती—ये चार खण्ड की चार बाती ऊपर।

दूसरे खण्ड में सात बाती—प्रमेय—भक्ति—आसक्ति—आवेश—व्यसन—फल—प्रणय—ये सात खण्ड।

तीसरे खण्ड में नौ बाती—नवधा भक्ति के भाव सों—श्रवण—कीर्तन—स्मरण—पाद सेवन—अर्चन—वन्दन—दास्य—सख्य-आत्मनिवेदन।

उतारवे को प्रकार (कितने आँटा उतारने)

"आदौ चतुः पाद तले च विष्णोः द्वौ नाभिदेशे मुखबिम्बमेकम्,
सर्वेषुचाङ्गेषुच सप्तवारमारार्तिकं भक्त जनैस्तु कुर्यात्।" (विष्णु धर्म)
"रतिर्देवादि विषया भाव इत्यभिधीयते" (हरि भक्त विलास)

सर्वांग में तथा आँखन में भक्त लोग आरती लगावें ताको आशय—

"नीराञ्जनं च पश्येद् यः देव देवस्य चक्रिणः
सप्त जन्मनि विप्रस्यलभते च परमं पदम्।"

प्रश्न—महाराज लोग प्रभु सन्मुख आरती करें; तथा मुखियाजी जेमने हस्त कांच मन्दिर की आड़ी आरती करें ऐसो क्यों ?

उत्तर—मुखियाजी चन्द्रावलीजी की आड़ी सों आरती करें। वो स्थान जेमने तरफ चन्द्रावली जी को है तासों। और महाराज स्वयं चन्द्रावलीजी एवं स्वामिनी जी होवे सो सन्मुख दृष्टि मिलाय आरती करें। वे मातृ भाव में हूं है।

मंगला आरती उतरे बाद मन्दिर वस्त्र होय के सन्मुख आवे। फूलधरिया माला की पूछे वो संकेत भाषा में कहे। टेरा आवे। भीतर सेवा होय, बाहर कीर्तनिया गली में कीर्तन होय। डोल तिवारी में बीन बजे। जो पद भीतर गवें वो होय। शृंगार होय जब तक बीन बजती रहे। चोखला गवें। ऋतु अनुसार पद गवें। कीर्तनिया गली में अष्ट सखी के भाव सों कीर्तन होय।

शृंगार प्रकार—आचार्य महाप्रभु जी ने दो ही शृंगार किये। मुकुट काछनी एवं पाग पिछोरा-चंद्रिका। बाद में गुसाईंजी ने सब प्रकार मण्डान बढ़ायवे पै शृंगार, भोग- राग में अभिवृद्धि करि प्रभु सुख पहुंचायो।

वन माला के शृंगार—कुल्हे—सेहरा, मुकुट-टिपारा। जिनको वर्णन या प्रकार है।

कुल्हे—बारह महिना में कुल्हे ४७ धरें जामें जड़ाऊ, सादा किनारी की, जरी की- तथा मोती आदि की केशरी, लाल, पीली, श्वेत-लाल, छापा की, गुलाबी। कुल्हे लहरिया, चुन्दड़ी की तथा और रंग की नहीं धरें। नीली कुल्हे वर्ष भर में एक ही (श्रावण कृष्णा ३) धरें। ये चाकदार, धोती, पिछोरा पे आवे। रथयात्रा के दूसरे दिन आड़बन्द पे कुल्हे धरें।

सेहरा—कुल १६ धरें। श्रावण सुदी, भाद्रपद सारे तथा आश्विन वदी में नहीं धरें। या में हूँ मंगलमय रंग में ही सेहरा धरें। ये चाकदार, धोती व पिछोरा पे धरें। कार्तिक शु० १२ कूं घेरदार वागा पे सेहरा धरें। सेहरा धरें तब ये बोले—"शुभके शिरमारोह शोभयति मुखंतव।"

मुकुट—बारह महिना में ३२ धरें। ये कार्तिक शु० ८ में छेलो धरें। फेर शीतकाल में नहीं धरें तथा फाल्गुन वदी ८ सो धरें, जो वैशाख शु० २ को छेलो धरे। आषाढ़ शु० ११ सो पुनः धरें।

किरीट तथा टोपी भी धरें। तब वनमाला को शृंगार होय है।

टिपारा—ये मल्लकाछ पे, पिछोड़ा पे और चाकदार पे ही आवे। गोल काछनी पे भी धरें।

किरीट—चार-पांच धरें। तीन निहित में धरें। कार्तिक शु० १५, पौष कृ० १, माघ शु० ४।

चार शृंगार मध्य के—पगा, दुमाला, फेंटा तथा ओरहूँ।

पाग—लटपटी, खिड़की की, गोल, दुरंगी, पंचरंगी, मोती की, सोने की, हीरा की, पिरोजी, मछली, चीरा आदि की।

वस्त्र—चाकदार, घेरदार, खूंट को वागा, सूथन, धोती उपरना पिछोड़ा, काछनी, मल्लकाछ, परदनी, आड़बन्द, फतवी, दुहेरा वागा, बन्द, गद्दल, चुंडी नाका।

पटका—तीकोने, रूमाल, गाती को, पीताम्बर, छोर को, सादा फेंट को, कटि को।

टोपी—दो दिन ही धरें। पोष शु० ६, भद्रपद कृ० १२।

ये तो संक्षेप में लिखे हैं। अगनित आभूषण, अगनित वस्त्र, अगनित सेवाक्रम में अगनित प्रकार है जो आचार्यन ने प्रभु आज्ञा सों अंगीकार करवाये। कुण्डल, हार, आभूषणादि अनेक रत्नन के धरें हैं। स्त्रीन के १६ शृंगार या प्रकार माने हैं—

"अंग शुची मंजन वसन मांग महावर केश,
तिलक भाल तिलचिबुक भूषण मेंहदी वेश ॥१॥
"मिस्सी काजल अरगजा बीरी ओर सुगन्ध,
पुष्पकली युत होय के तब नव सप्त निबन्ध ॥२॥

श्रीमद्भागवत में आभूषणन के कछु नाम अरू वर्णन—

मीनाकृति कुण्डल तथा किरीट दो या तीन—वर्ष भर में धरें।

"स्फुरत्किरीटांगद मीन कुण्डल श्रीवत्स रत्नोत्तम मेखलाम्बरैः।"
[श्रीमद्भागवत ८-२०-३२]

"मधुव्रत स्रग् वनमालयावृतो रराज राजन् भगवानुरूक्रमः।"
[श्रीमद्भागवत ८-२०-३३]

मकराकृति कुण्डल

"यस्याननं मकर कुण्डल चारूकर्ण भ्राजत्कपोल सुभगं सविलासहास्म्।"
[श्रीमद्भागवत ६-२४-६५]

"श्रीवत्सलक्ष्मं गलशोभिकौस्तुभं पीताम्बरं सान्द्र पयोद सौभगम्।"
[श्रीमद्भागवत १०-३-८]

"महार्हं वैदूर्यकिरीट कुण्डलत्विषा परिष्वक्त सहस्र कुन्तलम,
"उद्दाम कांच्यांगद कङ्कणादिभिर्विरोचमानं वसुदेव ऐक्षत।"
[श्रीमद्भागवत १०-३-१०]

"किरीटनं कुण्डलिनो हारिणो वन मालिनः, श्री वत्सांक ददौ रत्न कम्बु कंकण पाणयः,

"नुपुरैः कटिकै र्भाति कटि सूत्रांगुलीयकैः अंघ्रिमस्तकमापूर्णा तुलसी नव-दामभिः।" [श्रीमद्भागवत १०-१३-४७-४८]

"श्यामं हिरण्यपरिधिं वनमाल्य बर्हं धातु प्रवाल नट वेषमनुव्रतांसे,
विन्यस्त हस्तमितरेण धुनानमब्जं कर्णोत्पलालक कपोल मुखाब्जहासमू।"
[श्रीमद्भागवत १०-२३-२२]

"बर्हापीडं नटवरवपुः कर्णयोः कर्णिकारं विभ्रद् वासः कनककपिशं वैजयन्तीं च मालाम्
रन्ध्रान् वेणोरधर सुधया पूरयन् गोप वृन्दैर्वृन्दारण्यं स्वपदरमणं प्राविशद् गीत कीर्तिः।" [श्रीमद्भागवत १०-२१-५]

सुबोधिनी के आधार पर वस्त्र आभूषण अवतारन के वर्णन सहित—

(१) कपिलदेवजी—आपकी निश्चल स्थिति, निश्चल विराजनों—यही कपिलदेव अवतार स्वरूप है—यामें क्रियाशक्ति श्रीहस्त में होवे सों प्रभु के चार आयुध है सो चार भुजा ही चार पुरुषार्थ हैं। ये चार पुरुषार्थ देवे वारे है—उत्पत्ति, स्थिति, प्रलय-तप—ये चार क्रिया है।—ब्रह्मा, विष्णु, शिव, अग्नि इनके चार फल और चार आयुध हैं—क्रिया, योग, तप, ध्यान। ये ही शंख, चक्र, गदा, पद्म है।

(२) चतुरावतार—सनक, सनन्दन, सनातन, सनत् कुमार। ये आयुध शंख-जल तत्व, चक्र तेजतत्व, गदा पृथ्वी तत्व, पद्म वायु तत्व।

(३) नरनारायण—पुरुषोत्तम भगवान को मुखारविन्द नरनारायण भयो। जलाधार मुख, अयन स्थान, नर स्थान, जल स्थान मुख में व्याप्त भयो। तो नर नारायण अवतार मुखतें भयो।

(४) पृथु—कदम्ब केशर के समान पीताम्बर माया, एवं वेद पृथु है। कदम्ब किंजल्क वर्षा काल में होय है और भूमि सन्तप्त होवें सो वृष्टि करें। वैसे ही क्रिया शक्ति पृथु दोहन किये। पीताम्बर आच्छादनार्थ वेद यज्ञ स्वरूप पृथु वेदावतार भये।

(५) ऋषभ—जटित आभूषण ऋषभदेव। क्रिया शक्ति रूप भुजा ऊपर आभूषण सात्विक। वही ज्ञानरूप ऋषभदेव जी ज्ञान नीचे की बाहू भूषण। उनकी क्रिया शक्ति ऋषभदेवजी भये।

(६) हयग्रीव—कुण्डल की चमक, मुकुट की चमक हयग्रीवावतार भयो। ब्रह्म विद्या प्रवर्तक दोनों कर्णाभरण है जो प्रवृति एवं निवृत्ति है। ज्ञान है वही किरीट मुकुट भयो।

(७) मत्स्यावतार—पाद पल्लव, सत्यव्रत राजा को ज्ञान सुनायो। उनने पाद पद्म हृदय में धारण किये और विप्लव सों बचे।

(८) कूर्मावतार—श्री वत्स चिन्ह ही कूर्म की तरह है तासों सदा वहीं धरे।

(९) नृसिंहावतार—कौस्तुभमणी हृदय में धरें तथा बघनखा धरें।

(१०) हरिवतार—वनमाला म्लान न होय और लम्बी धरें वैसे हूँ आपकी कीर्ति भी लम्बी है। निःसाधन जो गजेन्द्र, ताकों छुड़ाये।

(११) वामनावतार—मेखला ही वामन रूप है। मेखला लम्बी तथा छोटी दोनों बन जाय। ऐसे ही वामन बोने तथा बृहद्—जो तीन पेंड में वसुधा नापी। वचनामृत बड़े करे। समर्पण स्वीकार किये।

(१२) मन्वन्तरावतार—चरणन के नुपुर कंकणादि नुपुर ध्वनिरूप मन्वन्तरावतार भये।

(१३) परसुराम—नीलकुन्तल (अलक) ये अलक टेढ़े होय है। परसुराम की वाणी हूँ टेढ़ी हुती।

(१४) धन्वन्तरी—नीलकुन्तल में जो स्निग्धता है वही धन्वन्तरीपनो अमल एवं नैरोग्य।

या प्रकार चौदह रत्न स्वरूप चौदह अवतार माने है। तथा उनकी लीला वस्त्राभरण भये।

(१५) राम—यश को स्वरूप-हास्यावतार।

(१६) कृष्ण—पूर्ण पुरुषोत्तम "कृष्णस्तुभगवान स्वयम्"

शृंगार भये बाद झारी भरवे की खबर जाय—या खबर में, न तो पहुंचवे की न पधारवे की कहे। ताको आशय यह है—शृंगार श्रीवल्लभ करें और झारी भरवे पधारें, वे वहां ही बिराजें। बाद में माला बोले—ताको आशय कन्हैया को शृंगार है चुक्यो है। बालगोपाल खेलो आय के, तासों फूलघर के माला बालक कहें गये, वे आवें दर्शन करें, तब दर्शन मिले। शृंगार होते में मेवा मिठाई मिश्री की कणी की थाली आवें—ताको आशय कन्हैया क्रीड़ा करते शृंगार धरावें। गोविन्द स्वामी पे सात कांकरी मारी अरू जब गोविन्द स्वामी ने एक कांकरी मारी तो विचक गये। ता भाव सो मिश्री की कणी आवे। (वार्ता गोविन्द स्वामी प्रसंग २ में)

फेर भोग सरे पै दर्शन मिले। दर्शन में ऋतु अनुसार कीर्तन होय तथा वेणु धरें। वेणु या लिए धरे—

"पीताम्बर को चोलना पहरावत मैया।
नन्दबाबा मुरली दई कहो कैसे बजैया।
जोई सुने ताको मन हरे परमानन्द बलि जैया।"

या शृंगार में माला एक ही धरें ताको आशय या प्रकार है सके है—शृंगार माता जसोदाजी करें, स्वामिनीजी माला धरावें तासों एक माला धरें। फिर आरसी बतावें। वह आरसी भाव स्वामिनीजी को है—तासों जब जब शृंगार होय, आरसी तब शय्या मन्दिर आड़ी सो आवे।

"सुभग शृंगार निरख मोहन को ले दर्पण कर पियहिं दिखावें।"
"चतुरभुज प्रभु गिरधर को स्वरूप सुधा पीवत नयन पुट तृप्ति न पावें।"

सुन्दर स्वरूप सेवा को सरस मारग प्रवीण यामें ज्ञान हूँ कथित है—"करिके शृंगार गिरधारीजू की वार वार आरसी दिखाय हरिराज जू हंसत है।"

आरसी बताय छाती सो लगावनी, ताको आशय—प्रभु युगल स्वरूप सदा हृदय में बिराजे रहें। स्वामिनीजी को स्वरूप दर्पण मान्यो है, प्रतिबिम्बवत् होय है। पिछवाई खण्ड—जैसे वस्त्र होय, वैसे तथा चितराम वगैरह की आवे। जड़ाऊ वगैरह और रंग की भी आवे। तकिया आवे नहीं। आरसी बताय वेणु लड़ी करे, फेर खण्ड पर वस्त्राच्छादन कर पाटिया पधरावे (गोपीवल्लभ भोग हेतु) या समें की झारी तबकड़ी में शय्या मन्दिर की आड़ी आवे।

गोपीवल्लभ—ब्रज ललनान के प्यारे कन्हैया गोपी वल्लभ। अरू वे नई नई वस्तु बनावें, सो अरोगावे, तो उनके भाव सों या भोग को नाम गोपीवल्लभ राख्यो।

बालक एक दफे शृंगार करत ही बाहर जाय है। सो प्रभु के शृंगार होय बाद में ये भोग आवे। या में ही छप्पन भोग आवे। या में ही स्नान यात्रा, रथ यात्रा आदि के विशेष भोग आवें। पनवारा भोग भी यामें ही अरोगें और धरन में याकों गोपाल वल्लभ नाम कहे।

इन दर्शन में ब्रजभक्त भोग साज के तैयार राखें और 'खेंचो' कहते ही टेरा आवे। ताको आशय यह—प्रभु भक्तवत्सल है। भक्तन की आतुरता सो सब काम छोड़ उनकी कामना पूर्ण करे। तासों हेलाके साथ ही टेरा आवे।

तासों ही ब्रजभक्त रूप चत्रभुजदासजी कहत है—

रानी जू एक वचन मोहि दीजे।
पढ़वो सदन हमारे सुत को कह्यो मान मेरो लीजे।
जब कछनी की सेज बनावत तब घर जिय अकुलात।
अटकत रहत तुम्हारे सुत पै इन बिन लियो न जात।
निसि दिन खेलें मेरे आँगन नयनन निरख सिराऊँ।
चत्रभुज प्रभु गिरधरन खेलको हसं-हसं कंठ लगाऊँ।

या भोग में कीर्तन नहीं होय। कारण—प्रभु सखन के घर पधारे तासों भोग कहाँ कहाँ अरोगें तासो कीर्तन न होय।

आठ समय में श्रीहस्त में मुरली चार ही समय धरें—चार समय पास में रहे। ताको आशय—मंगला, ग्वाल, उत्थापन, भोग में, इन चार में पास में रहे। कारण वेणुनाद सो गोपीजन मोहित होय जाँय और सेवा में बाधा पोहचे। चार समें शृंगार, राजभोग, संध्याति, शयन में वेणु धरें। ताको आशय—

शृंगार में—श्री स्वामिनीजी को एवं देवाङ्गनान को मोहित करवे।

राजभोग में—चन्द्रावलीजी एवं स्त्री पुरुषन को मोहित करवे।

संध्याति में—गैमन को मोहित करिवे एवं ब्रजललनान के विरह दूर करवे।

शयन में—भक्तन को एवं पंछी आदि के मोहनार्थ धरें हैं।

ग्वाल—समय भये गोपी वल्लभ सरवे की खबर जाय तब आचमन की झारी लेके जाय तब रसोई के दरवाजे की तरफ मुंह करके 'आओगें' कहतो जाय। ताको आशय है—रसोई में सू कढ़ाई वारो तथा तात्तें-ठण्डे वारो भोग सरावे जाय। भोग सरे पीछे अपरसकीन को हेला पाड़े। ताको आशय यह है—परचारक अपरस की सेवा करवे वारे दर्शन करवे जाँय। गौशाला को मुखीया भी पाँच पोशाक पहरि के आवे और गौमातान के समाचार लावे सो प्रभु जान लेवे कि गायें सुखेन सों बिराजीं। तब आप धैया अरोगें। भोग सरवे की खबर आते ही ग्वाल बोले। ग्वाल दूध लेके आवे पीछे दर्शन खुले। गोपीवल्लभ भोग सरें पीछे ठाकुरजी धैया अरोगें—

ब्रज के घर-घर प्रभु भोजन किये तासों पाचन करीवे को दुध के फेन अरोगे, तासो दुध की धैया कही गई। ये घर में आयके अरोगे तासो कीर्तन-कीर्तनिया गली में होय। एक ही कीर्तनियाँ मृदंग बाजा के साथ कीर्तन करे। यामें उराहना, माखन चोरी, दधिमन्थन तथा बाललीला के पद होंय। पद को नियम नहीं, जब तक धैया अरोगे तब तक होय।

धैया प्रकार—

"जसोदा मथि-मथि प्यावत धैया।
करि तबकड़ी धरत है आगे, रुचि सों लेत कन्हैया।
बहुरि धरत हरि लेत है पुनि-पुनि सुन्दर श्याम सुहैया।
ओट्यो दुध धर्यो वेला भर पीवत कान्ह कन्हैया।
मनमोहन भोजन को बैठे परोसत लै कर मैया।
षट्रस परकार धरे सब निरख रसिक बलिजैया॥"

यामें तबकड़ी सिद्धकरि अरोगावत है। जो तबकड़ी सातों बालकन की तथा सातों निधीन की गुसांईजी प्रभृतिन के भाव की होत हैं। जितनी तबकड़ी अरोगे उतने ही पान होय (बीड़ा में)।

या समय ग्वाल निकसवे की खबर जाय।

ग्वाल के दर्शन की सेवा भावना—

ग्वाल के दर्शन में सन्मुख कीर्तन न होय। कारण—बालगोपालन के साथ भोजन करवें पधारे और धैया बाबा नन्दरायजी के साथ अरोगें।

तासों ये दर्शन खेलकूद के हैं। तासों ही ग्वाल कहे। यामें तकिया नहीं आवे, यामें झारी तबकड़ी में शैय्यामन्दिर की आड़ी आवे। दर्शन खुलवे पे प्रभु के चरणन में तुलसी समर्पण होय। या दर्शन में ही काय कों ? दुसरे में क्यों नहीं—या दर्शन में जीव प्रभु शरणागत होय अर्थात् ब्रह्म सम्बन्ध लेय। यामें ही समस्त बालक बहू-बेटी चरण स्पर्श करें। यामें माला नहीं धरें, वेणु पास रहे, धरे नहीं। फेर चोकी पाटिया आवें तामें खाखरा की पातल बिछें। फेर धूप-दीप होय। सो एक ही घन्टा बजानो, धूप तथा दीप करे। वह शय्यामन्दिर आड़ी होयके करे। दुसरी सखी झिलावे।

माला नहीं धरवे को आशय—

माला ब्रजभक्तन के भाव सों धरत है सो सब ब्रजभक्त संग कैसे अरोगें। तथा बाबा नन्द के साथ अरोगवे पर या बालगोपाल खेल में ग्वालबालन के संग खेले, तासों ग्वाल समे माला नहीं धरें। और समय धूप-दीप न होय के केवल राजभोग के एवं शयन भोग के पूर्व ही क्यों होय तथा धूप-दीप है कहा ? याको आशय बतावें हैं—

बाबा नन्द राजा है, तासो राजसी ठाठ के भोग, विविध प्रकार के व्यञ्जन जामें आठ प्रकार के मीठा, बारह प्रकार के शाक, मूंग, दाल, भात, रोटी, बाटी, लीटी, भुजेना, दही, बासोंदी आदि अनेक प्रकार की सामग्री, सखड़ी, अनसखड़ी, दूध-धर, शाक-धर आदि की आवें और सखड़ी बनावें। वे अनेक होय तथा और सामग्रीन में ब्रज भक्त सेवा सिद्ध करें तो उनकी दृष्टि परे, ताके निवारणार्थ धूप होय। वह धूप चन्दन के बुरादे की होय। ताके सोरभ सो अन्य दोष दूर होय जाय, वह स्थान शुद्ध होय जाय। दीप बालक की अग्नि (क्षुधा) वृद्धि हेतु करी जाय। दीप दीवला भाँति की आरती के दो बाती की होय। घंटी एक ही होय।

"धूप-दीपो महार्हाणि दद्यान्मे श्रद्धयार्चकः [श्रीमद्भागवत ११-२७-३३]
"गुड पायस सर्पीषि शष्कुल्या पूपमोदकान्,
संयावदधि सूपाश्च नैवेद्यं सति कल्पयेत्तत्" [श्रीमद्भागवत ११-२७-३४]

तासो विविध व्यंजन आवे तब धूप-दीप होय अथवा नन्द बाबा राजा है। जब अरोगे तब सब वस्तु आवे। उनके दोष परिहार होय।

राजभोग में विशेष सामग्री काय कू आवे। एक तो बालक एक वस्तु सो रूच के पेट नहीं भरे, दूसरे रईस राजा एवं साधारण में का फर्क जाताको जा समें जो चीज की इच्छा होय, वही चीज अरोगवे में आवे, वही सम्पन्न है। प्रभु सर्व समर्थ होय के अरोगें क्योंकि वे नन्दराजकुमार है "पाको सप्त विधा स्मृता"

सात प्रकार के पाकन के अनेक भेद वर्णित है। जो सुन्दर, सुखद, प्रभु प्रिय वस्तु होय वही भोग में आवे। भागवत प्रणीत एवं आचार्यन के द्वारा निर्मित सामग्री आवे।

टेरा आवे, राजभोग सजे। जब तक राजभोग सजे, तब तक कीर्तनिया गली में मृदंग के साथ बीन बजे। बीन बजवे को आशय परमानन्ददास की वाणी में या प्रकार है—

परोसत गोपी घूंघट मारें।
कनकलता सी सुन्दरि सीमा आई ज्योंनारें।
झनक मनक आँगन में डोलत लावन्य भार संवारे।
नन्दराय नन्दरानी ते दुरि दुरि लाले भलें निहारें।
घर की सोंझ मिलाय थार में आगे ले जब धारें।
परम मिलनियाँ मोहन जू की हाँसी मिस हुंकारे।
रूचिर काछनी जटित कोंधनी जूरो बांह उघारे।
परमानन्द अवलोकन कारन भीर बहुत सी धारे।

या पद के आधार सो नूपुरनाद सो तथा ब्रज भक्तन के परोसवें में चलवें सो जो शब्द होय वही बीन द्वारा, मृदंग द्वारा ललित लाल कन्हैया को रुचि उपजावें और तासों बीन बजे।

राजभोग सजे बाद शंखोदक होय, तुलसी पधरावे। ये बाबा नन्द के साथ अरोगवे सों शंखोदक होय (अपोशान के भाव सों बाबा नन्द करें।) शंखोदक प्रमाण—

हरि भोजन करत विनोद सों।
करि करि कौर मुखारविन्द में देत जसोदा मोद सों।
मधु मेवा पकवान मिठाई दूध दह्यो घृत ओद सों।
परमानन्द प्रभु भोजन करत हैं भोग लग्यो शंखोद सों।

शंख को जमीन (पृथ्वी) पर न धरे, कछु पात्र में धरे ताको वर्णन या प्रकार है। कितनी वस्तु पृथ्वी पर नहीं धरनी।

"ब्राह्मण पुस्तकं शंखं नारीगंड स्तन मण्डलम्।
शालग्राम शिला चैते भूमि स्पर्श विवर्जिताः॥"

राजभोग के चार प्रकार माने है—

घर को—न्योते को—कुंज को—छाक को

पहलो घरको नन्दबाबा के साथ—

"हे रामागच्छ ताताशु सानुजः कुलनन्दन,
प्रातरेव कृताहारस्तद् भवान् भोक्तुमर्हति ।"
"प्रतीक्षते त्वां दाशार्ह भोक्ष्यमाणो व्रजाधिपः,
एह्यावयोः प्रियं धेहि स्वगृहान् यात बालकाः ।"
[श्रीमद्भागवत १०-११-१६-१७]

दूसरो न्योते को—जामें ससुराल पधारें तथा व्रज भक्तन के घर पधारें—

"चतुर्विधं बहुगुणमन्न मादाय भाजनैः ।
अभिसस्रु प्रियं सर्वां समुद्र इव निम्नगाः ॥

तीसरो कुञ्ज निकुञ्ज को—प्रिया प्रीतम के साथ अरोगें—

भोजन करत भावते जियके नवल निकुञ्ज महल में । (माधुरीदास)
मिल जेवत लाडिली लाल दुहुं कर व्यंजन चारु सबै सरसे । (हरिवंश)
बैठे लाल कुञ्जन में जो पाऊं ।
श्यामा श्याम भावती जोरी अपने हाथ जिमाऊं । (श्रीभट्ट)
एवं तौ लोक सिद्धाभिः क्रीडतु श्चेरतुर्वने । [१०-१८-१६]

वन भोजन चौथे छाकको—श्रीमद्भागवत में तीन स्थान में छाक के वर्णन मिले हैं ।

(१) वत्सहरणपूर्व (१०-१३) (२) धेनुकासुर उद्धार के समै (१०-१५) (३) यज्ञ पत्नीन की स्वीकृति में (१०-२२)

षोडस स्थान में वर्णन है (छाक को) श्रीगोकुलनाथजी की व्रज यात्रा—बरसाने, साँकरी खोर, आन्योर, गोविन्द कुण्ड, कामवन, भोजन थाली, नोनेरा, मोतीवन, शेषशायी भोजन थाली, चीरघाट, वृन्दावन, बंशीवट, गिरिराज, यमुना पुलिन, खिसलनी शिला, खेलनी शिला, श्यामढाक, कमोदवन, कदम्ब खण्डी ।

सप्त बार में या प्रकार छाक अरोगे—

सोमवार—वृन्दावन, मंगल—गोविन्द कुण्ड, बुध—आदिबद्री, गुरू—कामवन, शुक्र—नोनेरा, शनि—शेषशाई, रवि—चीरघाट ।

पदन में चार-चार छाक के तथा भोजन के किवाड़ खुले पे होय । छाक के पद चैत्र कृष्णा २ से गोपाष्टमी (कार्तिक शुक्ला ८) तक । फेर शीतकाल में भोजन के, घर के, न्योते के आदि । उत्सवन में बधाईन के पद होय । यह सब समाज के साथ होय । छाख के, चोखला के पद इतने प्रकार के होय—

दही की छाक, सेहरा की छाक, मोदक की छाक, कावर की छाक, शीतल-छैंया की छाक, कदम्ब की छाक, यमुनातीर की छाक, गैयन के संग की छाक, पीत उपारना की छाक, टेर की छाक, शिला की छाक, दहीभात की छाक, बाललीला की छाक, गिरिराज ऊपर छाक, मण्डल की छाक, वेणुनाद की छाक, ढाक की छाक ।

राजभोग को समय दो घड़ी होय—

"अहोतिरम्यं पुलिनं वयस्याः स्वकेलिसम्पन्मृदुलाच्छ बालुकम्
स्फुटत्सरोगन्धहृतालिपत्रिक ध्वनि प्रतिध्वान लसद्द्रुमाकुलम्"
[श्रीमद्भागवत १०-१३-५]

"अत्रभोक्तव्यमस्माभिर्दिवा रूढं क्षुधार्दिताः
वत्साः समीपे पपयः पीत्वा चरन्तु शनकैस्तृणम् ।" [१०-१३-६]
"दध्योदनं समानीतं शिलायां सलिलान्तिके,
सम्भोजनीयैर्बुभुजे गोपैः सङ्कर्षणान्वितः ।" [१०-२०-२६]

समय भये भोग सरवे की खबर जाय (समय भये के) बाद माला बोले माला बोलते ही नगाड़े बजें ।

माला बोलवे को आशय—श्रीनाथजी के फूलघर चन्द्र सरोवर में हुतो तासों माला लायवे की सूचना दई जाय । तासों माला बोले है । वामें आवाज हूं ये ही दें "माला वेगी लैयो ।"

नगारा बजवें को आशय—बाबा नन्द राजा है । वे घर पधार के अरोगवे बैठे, तब द्वार पर नगारा बजें । बड़े-बड़े लम्बरदार गोपगण पधारें । राजकाज करें ।

माला बोलवे पे भोग सरे, फेर मन्दिर घुवे । राजस्व साज जमें । जेमनी तरफ झारी-बंटा की दृष्टि आवै । बीड़ी अरोगे, माल धरे, दो फूल गुच्छा, छड़ी, कमल आदि ऋतु अनुसार धरें । दर्शन खुले वेणु वेत्र धरें, आरसी बतावें, फेर आरती होय । आरती होय पीछे पुनः आरसी बताय के वेणु वेत्र वड़े करे । बाद में खेल-खिलौना के साज आवे । दर्शन खुलत ही सारे समाज संग सन्मुख कीर्तन होय । पहले मुखीया कीर्तन प्रारम्भ करें फेर सब झेले ।

वेत्र छोटे शृंगार में एक, तथा भारी शृंगार में दो धरें । ताको आशय छोटे शृंगार में एक स्वामिनीजी के भाव सों एक वेत्र धरें अरु भारी शृंगार में उभय स्वामिनीजी के भाव सों वेत्र धरें ।

राजभोग में आरसी जेमने दिशि सों दिखावें। कारण—राजभोग की सेवा चन्द्रावलीजी की आड़ी सो होय है। प्रिया-प्रीतम निकुञ्ज में बिराजें। तां समय चन्द्रावलीजी प्रभृति सब सखी सेवा करें। तासों झांरी-घंटा, तृष्टि आदि सब जेमने दिश आवें तथा तिलकायत अथवा शृंगारी गेंद चोगान पधरावे। चोपड़ वगैरह भीतर की सेवा होय। सेवा के पश्चात दुसरो मुखीया माला गली में माला पधरावे। पहले मुखीया, तिलकायत, शृंगारी अथवा जितने बालक बिराजतें होय, उनको माला-बीड़ा झिलावे। प्रभु सन्निधि में माला नहीं धरावें। केवल जन्मदिन एवं विदा होय तब। शृंगारी को शयन की माला पहरावे, बीड़ी हाथ में देय। औरन को और माला तथा बीड़ा देय। बालक नहीं बिराजते होय तो गादीजी में बड़े मुखीयाजी पधरावें। छड़ीदार, पोलिया, भण्डारी संग जाय आवाज देय।

माला बीड़ा को भाव, एवं स्वरूप—तथा धरायवे को कारण—

माला-बीड़ा—

प्रमाण—रास पञ्चाध्यायी में वर्णित श्लोक एवं सुबोधिनी—

"उपगीयमान उद्गायन वनिता शत यूथयः,
मालां बिभ्रद् वैजयन्तीं व्यचरन्मण्डयन् वनम्।"

[१०-२६-४४]

सुबोधिनी—

मालामिति वैजयन्ती नवरत्न खचितां
स्वाभाविकीमैश्वर्यं प्रबोधिका कीर्तिमपि मालां विभ्रद्
वनमेव सर्वं मण्डयन् अलंकुर्वन् व्यचरत लीला गतिं कृतवान्।

नन्ददासजी की रास पञ्चाध्यायी सों—

फूलन माल बनाय लाल पहरत पहरावत।
सुमन सरोज सुधारत ओज मनोज बढ़ावत॥ १२४॥

सोमयाजी यज्ञ नारायण भट्टजी को विष्णुचित् संन्यासी ने गोपाल तथा कामवन में बिराजमान मदनमोहनजी पधराये तथा सोमयज्ञ की कहि गये। यज्ञारम्भ पश्चात् मदनमोहनजी ने सर्वप्रथम यज्ञ नारायण भट्टजी को माला-बीड़ा देय के आज्ञा करी—सो सोमयज्ञ पूरे होवे पे में तुम्हारे यहाँ प्रगट होऊँगो। सो प्रथम माला-बीड़ा प्रभु द्वारा प्रदत्त।

आगे सो सोमयज्ञ पूर्ण होवे पे वि० १५३३ में रामनवमी के दिन श्रीलक्ष्मण भट्टजी को माला-बीड़ा एवं वस्त्र प्रदान कीयो और आज्ञा कीये हम तुम्हारे यहाँ अवतरित होय रहे है।

तासों ही सर्वप्रथम ठकुराणी घाट पे वि० १५५० में श्रावण शुक्ला ११ को अर्द्धरात्रि में प्रभु दर्शन के साथ पवित्रा रूपी माला धराय मिश्री भोग धरी।

अतः स्वामिनी भाव वल्लभ तथा उनके वंशज एवं उनकी सहचरी रूपा समस्त वैष्णव तासों बड़े-बड़े मनोरथन में बीड़ा देवे तथा कार्यारम्भ में बीड़ा झिलायवे की पद्धति है। भक्तन ने हूं प्रसादी माला प्रदान करिवे को वर्णन या प्रकार कियो है—

सूरदास पहरी माल गुलाब सुगन्ध की लै राधे गिरधर तोय दीनी,
अब ही उरते उतार दई तोय अपने अंग रास रस भीनी।
घूंघट खोल देखि इन नैनन हँसि गहि जात सखी पे लीनी,
सूरदास गहरु जिन करो सुन्दरी मोहन लाला तोय वस कीनी॥

रास में मालव राग—

अलाग लाग उरप तिरप गति नचवत ब्रज ललना रासे।
मोहनलाल गोवर्द्धनधारी रिझवत छैल सुधर रासे।
.....

आपने कंठ की पिय स्रम दल की माला देत कृष्णदासे।

बैठे हरि राधा संग कुञ्ज भवन अपने रंग कर मुरली अधर धरे सारंग मुख गाई।
वल्लभ गिरधरनलाल रीझ दई अंक माल कहत भले-भले जु सुन्दर वर राई॥

अतः अंग राग-रस की भीनी माला स्वामिनी भाव सों देत है। सखी ललिताजी झिलावे और विशाखाजी देय। बड़ो मुखीया या लिये पहरावे—निकुञ्ज लीलाधिकारिणी है और सर्वसुख दात्री निकुंजेश्वरी होयवें सों विदा करत पुनः वेग पधारियो। छड़ीदार मधुरेक्षणा, भण्डारी कुरङ्गाक्षी, पोलिया, चतुरा या प्रकार चार संग पधारें।

बीड़ी तथा बीड़ा को भाव तथा भावना—राजभोग एवं शयन में तथा उत्सवन में बीड़ी विशेष अरोगें।

बीड़ी प्रकार—गिलोरी दोय (मातृस्तन भाव सों)। पान बत्तीस पूर्ण रसदाता युगल छवि श्री स्वामिनीजी षोडस कलात्मक एवं श्री श्यामसुन्दर षोडस कलात्मक। इन दोनों के रस स्वरूप वल्लभ। तासों ही—"सौन्दर्यं निजहृद्गतं प्रकटितं"—की व्याख्या में उभय रसरूप बनाये।

अनवसर—या समय अनवसर होय पोढ़े नहीं। अनवसर अर्थात् (अवसर नहीं)। उभयलीला विशिष्ट प्रभु पधारें कान्ताभाव सों कुंजबिहारी कुंज में बिहार करें। तामें अन्य सेवक सहचरीन को प्रवेश नहीं कह्यो हैं। यामें विविध सामग्री ऋतु अनुसार भीतर ही आवे।

"नाहिन समें सखी काहू को ग्वाल मण्डली सब बोराई"

अतः अवसर अब नहीं दूसरो। ग्वाल बालन के साथ वन वन भ्रमण करनो, गौचारण करानो, बाल क्रीडा करनो। उन बालकन के बीच अवसर अन्य कोई को नहीं तासों अनवसर कह्यौ गयौ। अनवसर को समय तीन घण्टा को राख्यो है। ज्यादा कमती सेवाक्रम में आचार्य की आज्ञा प्रधान है।

प्रश्न—ताला कहा कारन सूं लगे ?

उत्तर—ताला स्वामिनी स्वरूप मान्यो है तथा एकान्त में बिराजवे पर पट बन्द होय है। सेवाधिकारिणी श्रीस्वामिनी अब होवें तासों ताला लगे।

सायंकालीन सेवा—

मध्याह्न में ढाई बजे तथा यथावकाश शंखनाद के एक घण्टा पूर्व परचारक आवे। जैसे प्रातः गागर को हेला होय वैसे ही परचारक की खबर जाय। परचारक या लिये कह्यो—फूलघर, शाकघर की सेवा विशेष होयवे सो जो सहचरी अन्य सेविकायें हैं उन्हें परचारक कह्यो है। वहीं तीन स्थानन में गागर की तरह ही परचारक की खबर जाय।

बाद में सेवक न्हाय के आवे पे भीतरिया आयवे की खबर होय। फिर शंखनाद होय। ये शंखनाद उत्थापन के समय को कह्यौ गयौ।

श्रीनाथजी, श्रीनवनीतप्रियजी में घण्टानाद न होय के शंखनाद ही काय कों होय ? कारण—गौलोक धाम में घण्टानाद सतत होतो रहै है। यज्ञारम्भ में शंख ध्वनि ही होय है तथा वृहत् कार्य में शंखध्वनि को ही शंखनाद कहे है। और घरन में घण्टानाद नन्दालय के भाव सों होय है।

बारह महिना में एक बेर ही श्रीनवनीतप्रियजी में घण्टानाद मध्याह्न में गोवर्द्धनपूजा को पधरावें तब होय है। ताके अनेक भाव हैं।

उत्थापन—निकुञ्ज में उभय-भाव सो पोढ़े प्रभुन को घर लेजायवे हेतु जगावत हैं।

"भुवल श्रीदामा कह्यो सखन सों अर्जुन शंख बजाईये।
घर जैवे की भई है विरीयां गिरधरलाल जगाईये।

बीड़ा—आठ-दस-बारह पान के होय है। श्रीजी में बीड़ा बारह पान होय है। ये द्वादस निकुंज लीला परक हैं।

श्रीमद्भागवत में चर्वित ताम्बूल प्रदान को वर्णन या प्रकार है—

"गण्डं गण्डे सन्दधत्या अदात्ताम्बूल चर्वितम्" [१०-३३-१३]

सुबोधिनी—तां लक्ष्मीं प्रति मूल पर्यन्तमिति। लक्ष्मीवन्तं प्रति पुनः पुनरावर्तत इति ज्ञान ताम्बूलयोस्तुल्यता। चर्वितमिति साधन प्रयास भावेन सिद्धि दानम्॥

तासों ही बीड़ी अरोगावे तब उगार तृप्ति में एक सखी झेले। चर्वित ताम्बूल सों वल्लभाख्यान वारे गोपालदासजी मूक हते वाचाल भये। दस दिगन्त पुरुषोत्तम जी महाराज दश दिगन्त बने।

राजभोग की बीड़ी वर्णन—

बैठे लाल कालिन्दी तीरा।
ले राधे गिरधर दै पठ्यो यह परसादी बीरा।
समाचार सुनिये श्रीमुख के जे कही स्याम सरीरा।
सुन्दर स्याम कमलदल लोचन पहरे है पट-पीरा।
तेरे कारन चुन चुन राखे जे निरमोलक हीरा।
परमानन्ददास को ठाकुर लोचन मरत अधीरा।

शयन में कुम्भनदास की वाणी में बीड़ी को वर्णन—

ले राधे गिरधर दे पठई अपने मुख की सुन्दर बीरी
सुनहुं सन्देसो प्रान प्यारे को कित सकुचत आवहु किन नीरी
घूंघट खोल नेन भर देखो बहां चलो प्रीतम की प्यारी
कुम्भनदास प्रभु गोवर्द्धन धर मिलि करिये किन छतिया सियरी।

ताम्बूल प्रशंसा—

ताम्बूलं कटु तीक्ष्णमुष्ण दहनं क्षारं कशायान्वितम्
वातघ्नं कृमि नाशनं कफहरं दुर्गन्ध निर्नाशनम्
वक्त्रस्याभरणं सुगन्धिकरणं कामाग्नि संदीपनम्
ताम्बूलस्य सखे त्रयोदश गुणाः स्वर्गेपि ते दुर्लभाः।"

तासो वैष्णवन कूं भी बीड़ा दियो जाय है। महाराज सहचरीनकूं मान को बीड़ा देय है।

मुखीयाजी प्रभृति भीतर आवे अवशिष्ट सेवा पहुंच पट बन्द करे। अनवसर करें। ताला मंगल आदि।

ठौर ठौर मधुर धुन बाजे मधुर-मधुर सुर गैये।
कुञ्ज सदन जागे नन्दनन्दन मुदित बीरा फल लैये।
हरिदास वर्य के पूरो मनोरथ गोकुल ताप नसैये।
लटकत आवत कमल फिरावत परमानन्द बलिजैये।

तासों उपरोक्त शंखनाद तीन बेर होय। शंखनाद की खबर गादीजी पे जाय। पीछे भीतर सेवा होय के दर्शन खुले। जितने साज वगैरह उठे खंगाले (शुद्ध होवें) तब तक दर्शन होय। फेर पाटिया पधरावें अरु 'खेंचो' कहत ही टेरा आवे। ताको आशय—पुलिन्दनी आतुर होत है, उनकी आतुरता प्रभु सहि न सकत। फेर भोग आवे। झारी स्वामिनीजी की ओर से शय्यामन्दिर आड़ी। यामें शाकघर के विविध फल-फूल तथा वहाँ की सामग्री विशेष रूप से आवें।

चार सखीन के भाव, शाकघर में तथा सेवा में—

(१) टेरावारे प्रेष्ठ सखी (२) जिन्हें भीतर सेवा पधरायवे को अधिकार है वे प्रिय सखी (३) शाकघर में सेवा सिद्ध करे वे आली सखी (४) बाहर वारी तथा भीतर शाकघर की सेवा करनहारी सखी।

या ही प्रकार फूलघर में हू चार प्रकार की सखी या प्रकार हैं—

(१) फूलघरिया प्रेष्ठ सखी (२) आली सखी (साग वारो)
(३) माला उतारवे वारो प्रिय सखी (४) अन्य सखी

उत्थापन समें शंखनाद के बाद बीन बजे तथा बीनकार ही उत्थापन में सन्मुख एक ही कीर्तन करे। ताको आशय—प्रभु वन-वन में फिरे, एक स्थान में पोढ़ें और जगते ही मधुर धुन सों मधुर-मधुर गान करे। तासों एक ही पद गान करे। यहाँ भोग अरोगते में पद या लिये न होंय—पुलिन्दनी गिरिराज की छाया में अरोगावें तासो हरिदास वर्य के पूरो मनोरथ तो वे सकल सेवा करे। यामें हू शंखनाद के पूर्व कमल चौक आदि में प्रवेश बन्द है। ताको आशय—यहाँ प्रिया-प्रीतम अथवा बाल-गोपाल वनबिहारी स्वच्छन्द लीला करे। तामें सबन को प्रवेश होय तो नीको नहीं। जागे बाद ही सब दर्शन करें।

भोग के समय की सेवा तथा भाव—

यह दर्शन—राजाधिराज सरूप में ब्रज पधारवे के भाव सों है। यामें विविध राजस रूप या प्रकार है—

भोग सरवे की खबर आये बाद ऊपर सों 'आओगे' की आवाज होय अर्थात्, देवगण, गन्धर्वगण, अप्सरा आदि ब्रज पधारवे आवें; पधारें फेर भोग सरे। फेर भोग सरे बाद दर्शन खुले। यामें समस्त कीर्तनिया कीर्तन करें।

छड़ीदार शृंगार करि सन्मुख रहे। कीर्तन होय बाद सन्मुख मृदंग एवं सारंगी बीन बजे। वेणु-वेत्र ठाड़े करे। भीतर शय्या मन्दिर की सेवा होय। समाधानी सोहनी करे (मणीकोठा) में। तिलकायतजी, या शृंगारी या बड़ो मुखीया या जो भी होय झारी भरवे (झारी बदलवे) पधारें। पंखा होत रहे। वेणु वेत्र वड़े करे। मोरछल होत रहे। या दर्शन में झारी शय्या-मन्दिर आड़ी आवे तथा बीड़ा को बंटा हूँ आवे। माला दोय धरे। उत्थापन में माला नहीं धरें ताको आशय—उठके पधारें तो माला कुम्हलाय जाय तथा पोढवे में श्रम होय।

भाव—प्रभु अरोग के ब्रज पधारे, आगे गायें, पीछे गायें, बीच में प्रभु वेणु-वेत्र लिए भये। सन्मुख प्रभु की आड़ी मुख करके मृदंग, बीन, सारंगी बजे कीर्तन होवे नाचत गावत ब्रज भक्त पधारें। आगे सखा रूप, सहचरी रूप छड़ीदार चलतो आवे। समाधानी सोहनी करत चले तामें प्रभु के चरणन में कंकरी चुभे नहीं तासो फेर ब्रज में पधारवे पै जो आर्त गोपियाँ वन-विहार में वियोगानुभव को पूर्ण करिवे द्वार, द्वार, घर की अटारी, झरोखा, मोखान सो दर्शन करें।

छड़ीदार को शृंगार—स्वरूप भाव मधुरेक्षणा को चारों दिस देखते चलनो। सारो अधिकार कुंज सों ब्रज तक पधराइवे कों। प्रभु के जैसे वस्त्र आवें वैसी पाग तथा पटका व ठाड़े वस्त्र होवें। वैसो कमरबन्द, सफेद घेरदार वागा (जामा), सोने के कड़ा, छड़ी, बाला तथा गोप (रामनवमीजैसो)।

ब्रज में वन सों पधारवें को तथा ब्रज ललना के दर्शन की आतुरता के कई पद भक्तन ने गाये है। कुछ या प्रकार है।

—नाचत गावत वनते आवत, लाल टिपारो सीस रह्यो फवि।
श्याम धाम सरस्वती सकुच रही या वानिक बरनत को कवि।

गोविन्द स्वामी—

नटवर वेष किये ग्वाल मण्डली संग लिये गावत बजावत देत करि तारी के।
गोविन्द प्रभु वन ते आवत ब्रज दोरि-दोरि ब्रजनारी झांकत मध्य जारी के।

सोहनी करवे को वर्णन या प्रकार है—

पाछे ललिता आगे श्यामा प्यारी, ता आगे पिय मारग में फूल बिछावत जात।
कठिन कली बीन करत न्यारी न्यारी प्यारी के
चरण कोमल जान सकुचत गढ़वे हूँ को डरात।

ब्रज भक्त अपने अपने भवन ते संकेत माँगत है। आप उन्हें उत्तर देत ताको वर्णन नन्ददास या प्रकार करे है—

पूर्वी—हाँके हटक हटक गाय ठठक रही गोकुल की गली सब साँकरी।
जारी, अटारी, झरोखन, मोखन, झाँकत दूर दूर, ठौर ठौर ते परत कांकरी।
चम्पकली, कुन्दकली वरखत रसभरी तामें पुनि देखियत लिखे है आँकरी।
नन्ददास प्रभु जहीं जहीं द्वार ठाड़े होत तहीं तहीं वचन माँगत।
लटक लटक जात, काहू सो हाँ करी, काहू सो ना करी।

ताके पीछे मधुरेक्षणाजी (छड़ीदारजी) टेरा करि के बैठक में तथा जनाने में खबर करवे जाय है। ताको आशय यह है—

निकुंज स्थित स्वामिनीजी कों (आचार्य को) खबर करे है कि प्राणनाथ बनते ब्रज (नन्दालय) में पधारें। तब श्री स्वामिनीजी दर्शनार्थ अर्थात् गौ दोहावन मिस पधारत हैं।

जब भी दर्शनन में तथा सेवा में अवकाश होय तब प्रभुन को पंखा तथा मोरछल करें। बड़ो मुखीया तथा दूसरो मुखीया जोभी या सेवा में आवें सो आचार्य की आज्ञा वारे ही आवें।

प्रश्न—मोरछल कहा? तथा क्यों? और वह तीन मास ही काय कों होय?

उत्तर—मोरछल दोष निवारणार्थ होय है अरू निकुंज में अनेक ब्रज-भक्त दर्सन करें सो नजर लगनो स्वाभाविक है। तासो मोरछल करें।

यमुना पुलिन विहार में ८-९ मास दोष निवारण में माँ यमुना सहयोगी होयवें सो दोष न लगे। तासों मोरछल न होय। भोग में ही उष्ण काल में फूल के शृंगार धरें।

संध्यार्ति—टेरा आये बाद भोग आवे है यामें हूँ फूल के शृंगार वगैरह के भोग आवे है।

भावना—वन सो आवत ही समस्त ग्वाल-बालन के संग छाक सो बच्यो कछु अल्पाहार प्रभु करें। फल-फूल के पश्चात् कछु भोजन करनो चाहिये तासों भोग आवे। जब तक भोग आवे तब तक बीन में जो सन्मुख पद भयो होय वह निकसे। फेर आरती की खबर जाय पीछे दर्शन खुलें। भोग सरे पीछे दर्शन खुलें।

यह संध्यार्ति मातृ भाव सों है। अनेक वनन में प्रभु घूमें। कहूँ ठौर कुठौर में पाँव परे तासों घर आवत ही द्वार पर आरती (वारणा या उतारा) करें। यामें वेणु-वेत्र धरावें और फेर आरती करें। संध्या त्रिकाल समै को वारणा-उतारा ही संध्यार्ति कही गई है। यामें सामूहिक कीर्तन ऋतु अनुसार होय (सब साजसों) फेर टेरा आयके शृंगार बड़े होय। फेर श्रम निवारणार्थ दूध रसवर्धक, बलवर्धक होवे सो धैया अरोगें।

शृंगार बड़े होते ही ग्वाल बोले। ग्वालजी दुध अरोगावन लावें। प्रभु जब-जब दुध अरोगे (दो समेत) तब फेन अरोगे। कारण—बैठी गाय को दूध बच्चा को भारी करे। शयन भोग में जो दूध आवे सो गाये वन-वन में चर के पधारे तासो दूध हल्को होय। बैठी गाय को दूध भारी होवें सो फेन अरोगे।

श्रीमद्भागवत में श्रम निवारण तथा सायं, दूसरे शृंगार भोजन प्रकार यों वर्णित है—

तयोर्यशोदा रोहिण्यौ पुत्रयोः पुत्रवत्सले।
यथा कामं यथाकालं व्यधत्तां परमाशिषः॥
गताध्वान श्रमौ तत्र मज्जनोन्मर्दनादिभिः।
नीवीं वसित्वा रुचिरां दिव्य स्रगन्धमण्डितौ॥
जनन्युपहृतं प्राश्य स्वाद्वन्नमुपलालितौ।
संविश्य वरशय्यायां सुखं सुषुपतुर्व्रजे॥
[श्रीमद्भागवत १०-१५-४४-४५ ४६]

शयन प्रकार—

धैया अरोगवे में तानपूरा सों एक व्यक्ति कीर्तन करतो जाय। जो उत्थापन भोग में भये होंय—वो, अथवा गौ दोहन आदि के पद होय। ये सब पद तानपूरा ही सों होय।

फेर शयन भोग आवें धूप-दीप शयन भोग में होय। नन्दबाबा के संग अरोगवे के भाव सो पूर्ववत है। जामें सखड़ी, अनसखड़ी, दूधघर की सामग्री यथा ऋतु यथाक्रम आवें।

या समय कीर्तन व्यारू के होंय। उत्सव बधाई आदि में बधाई वगैरह के होंय। तथा एक ही व्यक्ति तानपूरा सो करे। फेर बीच में दूध आरोगवे को प्रकार होय। बाहर दूध आरोगवे के पद होय। या समें तुलसी नहीं समर्पें, शंखोदक नहीं होय। ताको आशय—अपोशनादि शास्त्र में एक ही बेर उचित है तासों बाबा नन्द प्रातः ही करे।

राजभोग पश्चात् छाछ अरोगनो आवश्यक है तासों बारह ही महीना छाछ अरोगें। शयन में दूध अरोगनो आवश्यक है तासो शयन भोग अरोगते बीच में दूध अरोगें।

शयन—चैत्र शुक्ला १ या नवमीं सो आश्विन शुक्ला ६ तक शयन के दर्शन बन्द रहें। तथा आश्विन शुक्ला दशमी (दशहरा) को खुलें सो मार्गशीर्ष शुक्ला ६ तक खुलें। मार्गशीर्ष शुक्ला ७ सो माघ शुक्ला ४ तक भीतर होय। बाद माघ शुक्ला ५ (बसन्त) सो नव वर्ष या रामनवमी तक बाहर खुलें।

चैत्र शुक्ला १ या ६ सो आश्विन शुक्ला ६ तक शयन के दर्शन नहीं खुलें। ये छः मास शृंगार सेवा भीतर ही होय। यामें तनिया, पाग पे फूलन के जोड़ शयन भोग सरे बाद धरें।

लोकोक्ति—छः मास प्रभु ब्रज में शयन के दर्शन देवें पधारें। छः मास मेवाड़ में।

शृंगार—जब घेरदार या चमकदार बागा धरें तब मध्य को शृंगार छोटो होय जाय। फाल्गुन में एक कण्ठी ही धरें। बाजु पहुंची धरी रहे। कर्णफूल धरे रहे या आवें। कुण्डल बड़े होय जांय। पाग में लूम तुर्रा धरें। फेंटा, पाग, टिपारा, कुल्हे यों ही रहे। तापै कछु नहीं धरे तथा ऊपर को साज बड़ो होय जाय। गोपाष्टमी पे मुकुट धरें तासों शयन में उत्सवाङ्ग कुल्हे धरें। तथा कार्तिक शुक्ला १४ को टीकेतन ने मोर चन्द्रिका एवं केशरी पाग को शयन में शृंगार कियो। तासो शयन में चन्द्रिका एक ही दिन धरें। कुल्हे जड़ाऊ आवे तो पाग धरें। ऊपर न धरें तब शयन बन्द होय। यदि होय तो पाग ही आवे। तो पाग पे लूम-तुर्रा हू धरें। आभरण छोटे तथा मध्य के शृंगार हूँ होय जैसे शरद् में।

शयन में लूम-तुर्रा कायकों धरें ? ताको आशय—

प्रभु प्रतिदिन दुल्हे बनिकै शयनागार में पधारें।

"दिन दुल्हे मेरो कुंवर कन्हैया।"

शयन भोग सरवे की खबर जाय और रसाईया बोले। रसोईया बोलवे को आशय यह है कि भोग सरायवे रसोईयाजी आवें। रसोईया बोलते ही नगारा बजन लगे ताको आशय—पूर्ववत् नन्दबाबा राजा है। राज-काज को घर पधारे बाबा बिराज रहे हैं। द्वार पर नगारा बजे। फेर भोग सरे बाद सन्मुख बीरी अरोगें। मन्दिर धुवे बाद दर्शन खुले (ये दर्शन बाहर खुले तब)। फेर वेणु धराय आरती होय। या समें पे वेणु मात्र ही धरें। तब सब सखी निकुञ्ज में प्रिया-प्रीतम के दर्शन करें। शयन बाहर होय तब तानपुरा सों ही ऋतु अनुसार

कीर्तन होय। मंगला के समान ही एक गावे और दूसरो झेले। आरती उतर चुके तब वेणु वड़ी करि, माला, गेन्दुवा, वेणुजी शय्या मन्दिर में पधारें।

तब मुखिया कीर्तनिया की तरफ देखे अर्थात प्रभु निकुञ्ज में प्रियाजी सहित पधारें। कीर्तन बन्द करिके दर्शन बन्द होवे। पद मान के तथा पोढ़वें के कीर्तन होय। पौन घन्टे बाद बीन बजे।

ताला मंगल भये बाद बीन बजे। मालाजी पधारें अथवा गो० बालक धराय के पधारे। ये माला राजभोग समय की होय है जो धरावें। सब सेवक अपनी-अपनी सेवा पहुंच वीनती कर दण्डवत् करि घर जांय। या प्रकार नित्योत्सव अथवा नित्य सेवा होय।

(६)

उभय लीलात्मक अष्टयाम सेवा—

मंगला	—	बालभाव
शृंगार	—	उभयभाव एवं कान्ताभाव
ग्वाल	—	बालभाव
राजभोग	—	कान्ताभाव
उत्थापन	—	बालभाव
भोग	—	कान्ताभाव, उभयभाव
आरती	—	बालभाव
शयन	—	कान्ताभाव, उभयभाव

कायेन वाचा मनसेन्द्रियैर्वा बुध्यात्मना वा प्रकृतेः स्वभावात्।
करोमि यद्यद् सकलं परस्मै नारायणायेति समर्पयेत्तत् ॥ १ ॥

तनगत, मनगत, कर्मगत करत सकल जो काज।
तब प्रताप तब बलहि सों ग्रन्थ भयो महाराज॥
कीनो पूरण भाग ये प्रथम नित्य सुख साज।
अष्टयाम कछु बुद्धि लहि वरणि सके को राज॥
महाप्रभु की महदही महाकृपावल पाय।
जो कछु लिख पायो वही श्रीगोवर्द्धन गाय॥

परिशिष्ट— कुछ विशेष सेवा यादी

खबर सूचना—

गागर आवे की, भीतरिया आये की, शंखनाद की सूचना, मंगल भोग सरवे की, मंगलार्ति की, झारी भरवे की खबर, माला बोले, भोग (गोपीवल्लभ)

सरवे की, ग्वाल बोलवे की खबर, माला बोलवे की राजभोग सरवे की खबर, मालाजी पधारवे की खबर, राजभोग आरती की खबर। परचारक आयवे की खबर, भीतरिया आयवे की खबर शंखनाद की सूचना, भोग सरवे की खबर, ऊपर सों आओगे की आवाज, छड़ीदारजी द्वारा खबर, सन्ध्या आरती की खबर, बीच में ग्वाल बोले, शयन की दूसरी खबर, शयन भोग सरवे की खबर, रसोइया बोलवे की शयन आरती की खबर, माला पधरायवे की खबर।

अधिक दर्शन कब होय—

१ बसन्त पंचमी के दिन राजभोग दो होय। आज नो दर्शन होय।
२ डोल के तीन दर्शन अधिक होय।
३ राम नवमी, अक्षय तृतीया, वामन जयन्ती के दिन राजभोग के दर्शन दो होय। एक अधिक।
४ नृसिंह जयन्ति को ग्वाल अरोगे पीछे अधिक दर्शन खुलें।
५ जन्माष्टमी पे शयन में जागरण होय।
६ ग्रहण में विशेष दर्शन होय।

आठ दर्शन कब कब बाहर नहीं होय—

१ मंगला—प्रबोधिनी प्रातः होय तो मंगला नहीं खुले।
२ शृंगार—अन्नकूट एवं छप्पन भोग के दिन शृंगार नहीं खुले।
३ ग्वाल—बड़े उत्सव जन्माष्टमी, नन्दमहोत्सव, महाप्रभुजी को उत्सव, गुसाईंजी को उत्सव, भाई-दूज, अवेर-वेग होय तो ग्वाल न बोले ग्वाल न खुलें।
४ राजभोग—अन्नकूट एवं डोल के दिन।
५ उत्थापन—दिवाली, प्रबोधिनी सायं होय तो जल भरे तो।
६ भोग—श्रावण के झूलान में एक मास।
७ संध्यार्ति—अवेर-वेग होय तो भोग-आरती शामिल होय जाय। जब सवेरे ग्वाल नहीं बोले तो भोग-आरती शामिल होय।
८ शयन—चैत्र शुक्ला १ या ६ सों दशहरा तक। मार्गशीर्ष शु० ७ सों माघसुदी चार तक नहीं खुले।

डोल तिवारी कब कब रुके (या में सेवा होय, काम आवे)

श्रावण मास में हिण्डोला में, रामनवमी सों दशहरा तक बाहर पोढें, फाल्गुन सुदी १५ या चैत्र वदी १ को डोल झूले, महाप्रभुजी के उत्सव पे चन्दन

को बंगला आवे, ज्येष्ठ में दोनों दशमी जल भरे, राधाष्टमी सों दशहरा तक बंगला ध्रुव बारी के नीचे आवें। नाव के दिन जल भरे तब।

अन्नकूट, दिवाली, प्रबोधिनी, छप्पन भोग, स्नान यात्रा, रथ-यात्रा आदि में।

(१) फूल मण्डनी चार यूथाधिपान के भाव सों होय—
चैत्र कृष्ण २ (चन्द्रावलीजी), चैत्र शुक्ला १ (स्वामिनीजी), चैत्र शुक्ला ५ एच्छिक (ललिताजी), चैत्र शुक्ला ६ (जमनाजी)
(२) चन्दन यात्रा चार—चंदन बंगला (स्वामिनीजी), चन्दन चोली (चन्द्रावलीजी), चन्दन चोली (जमनाजी), चन्दन चोली (ललिताजी)
(३) अभ्यंग पांच—चार सखीन के भाव के ज्येष्ठ में, एक विशाखाजी की ओर सों अषाढ में।
(४) जन्माष्टमी के शृंगार चार यूथाधिपान के भाव सों—बधाई को श्रावण कृष्णा ८, तीन लगातार।
(५) अन्नकूट के चार शृंगार दिवाली सहित—परचार की, दिवाली, अन्नकूट, अक्षय नवमी।
(६) द्वादशी शीतकाल की चार—दो मार्गशीर्ष, दो पौष।
(७) डोल के दर्शन चार, पाँच दिन डोल गायो जाय।
(८) श्रावण में सन्मुख झूलवे पै चार पद गाये जाँय, आठ पद हू गाये जाँय तथा नित्य चोखला गाये जाँय।
(९) मंगल भोग चार।
(१०) दान ठौर चार।
(११) हिण्डोला के प्रधान हिण्डोला चार—नन्दालय में, गिरिराज पर, यमुना पुलिन पर, कुञ्ज में।
(१२) जल विहार चार—स्नान, दोनो दशमी, तथा नाव।
(१३) चोली चार—गुलाल, अबीर, चन्दन, चोवा।
(१४) खेल (फाल्गुन में) चार सो होय—गुलाल, अबीर, चोवा, चन्दन।
(१५) खण्डिता, हिलग, मिषान्तर, व्रतचर्या।

आचार्य महाप्रभू के सेवक सांचोरा ब्राह्मण ११ तिनके नाम वार्ता—

(१) वार्ता ३४ पद्मरावल सांचोरा पृष्ठ १०५
(२) " ३५ पुरूषोतम जोशी सांचोरा पृष्ठ १०८
(३) " ३६ राणा व्यास सांचोरा पृष्ठ १२०

(४) वार्ता ४१ गोविन्द दवे सांचोरा पृष्ठ १२६
(५) " ४२ राजदवे माधोदवे सांचोरा पृष्ठ १२८
(६) " ४३ श्लोक दास सांचोरा पृष्ठ १३६
(७) " ४४ ईश्वरदास सांचोरा पृष्ठ १३६
(८) " ६० भगवानदास भीतरिया पृष्ठ १६६

ऊपर सांचोरा नीचे के सांचोरा बीच के जोशी तीन ये भी सांचोरा ही है सके है। अतः तीन नाम या प्रकार है—

(९) वार्ता ३६ जगन्नाथ जोशी } पृष्ठ ११०
(१०) " ३७ जगन्नाथ जोशी की माँ } " ११६
(११) " ३८ नरहरी जोशी, जगन्नाथ जोशी }

या प्रकार एकादश सेवक सांचोरा भये।

गुसांईजी विट्ठलनाथजी के सेवक साँचोरा—

(१) वार्ता ६ कृष्णभट्ट, (पद्मरावल के बेटा) साँचोरा पृष्ठ ४१
(२) " ७४ दो भाई साँचोरा " १७५
(३) " १४५ भीमजी दवे साँचोरा " २५६
(४) " १४३ आनन्ददास सांचोरा " २५७
(५) " १६५ गोकुल भट्ट, कृष्णभट्ट [गोविन्द भट्ट के बेटा] " २८८
(६) " १७२ भगवानदास भीतरिया साँचोर ा(गुजराती) " २६७
(७) " २०८ पुरुषोत्तमदास जी साँचोरा " ३४५

नैमित्तिक उत्सव

निमित्त को लेकर जो उत्सव किये जाय वह नैमित्तिकोत्सव (मनोरथ) कहे जाँय हैं। यह नैमित्तिकोत्सव आचार्यन के प्राकट्योत्सव गोस्वामी बालकन के जन्म दिन उत्सव तथा छप्पन भोग चार स्वरूपोत्सव पाँच छः सात स्वरूपोत्सवादि हैं। इनमें बारह महीना के मनोरथ उत्सव शामिल हैं। नैमित्तिकोत्सव की परिभाषा मनोरथ भी है सके। जैसे कोई निमिति लेकर मनोरथ करे सर्वप्रथम गोस्वामीति० दुहरे मनोरथ कर्ता दाऊजी ने षड्रितु विलास मनोरथ कियो। गोस्वामीतिलक गोवर्द्धनेशजी ने सर्वप्रथम हांडी उत्सव कियो तथा अन्य आचार्यन ने छप्पन भोगादि किये।

यह मनोरथ नैमित्तिकोत्सव चार यूथ नायिकान के ओर से तीन-तीन मास की सेवा में होय है उनमें हर नायिका के समय में एक महोत्सव यानी उद्यापन को स्वरूप होय है। आचार्यन ने सारे उत्सव मनोरथ तथा स्वरूपन के विग्रह प्राकटय एवं लीलादि श्रीमद्भागवत दशम स्कन्ध की लीला में तथा रास पञ्चाध्यायी की प्राण भूता द्वादश अंग मानिकै द्वादश मास लीला में उत्सव मनोरथ किये मनोरथ की परिभाषा सुबोधिनी में निम्न प्रकार है :—

मनोरथ—मन के उत्साह की अभिव्यक्ति इच्छा लिप्सा कामना पूरक कार्य क्रम ही मनोरथ होय है। युगलगीत के २२ श्लोक में सुबोधिनी में या प्रकार वर्णन मिले हैं।

"मनोरथान्तं श्रुतयो यथाययुः"

मनोरथान्तं ययुरिति। ताभिर्यथा कथंचित् सम्बन्धो अभिलषितः। जातस्तु-ततो अनन्तगुण सामग्री सहितः। अतो मनोरथस्यान्तो यत्र सादृशं ययु अनभिलषितं कथंप्राप्नुयुः। श्रुतयो यथेति" श्रुतयोहिनिरन्तर भगवद् गुण पराः"

रास पञ्चाध्यायी के द्वादश अंगभगवदीयन ने तथा टीकाकारन ने ये द्वादश माने है उन्हें ही द्वादश मास की सेवा में सम्मिलित माने हैं—

(१) वंशीध्वनी (२) गोपिन को अभिसार (३) कृष्ण के साथ बातचीत (४) रमण (५) राधा को ले जानो बातचीत ओर (६) पुनः प्राकटय (७) गोपिन के दिये आसन पर विराजनो (८) गोपिन के प्रश्नन को उत्तर (९) महारास (१०) नृत्य (११) क्रीड़ा वन-विहार (१२) जल-विहार।

चार यूथाधियान के वर्णन हरिरायजी एवं द्वारकेशजी आदि ने विशद वर्णन कियो है कछु सूरदासजी एवं गोस्वामी विट्ठलवर के उधृत करे है।